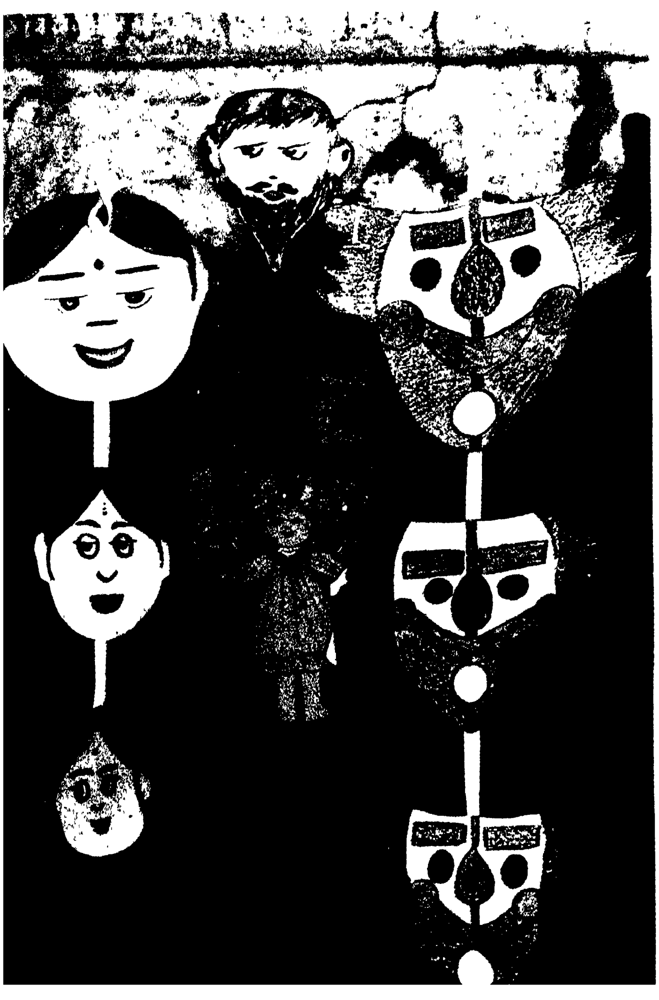


'सीखने का मज़ा' अभियान के राष्ट्रीय उत्सव (7 से 14 नवम्बर, 94) में चार टुकड़ों में बना हाथी का चित्र (ऊपर)। कागज़ से बने मुखौटे (नीचे बाएँ) तथा कागज़ की लुगदी का बना पुतला (दाएँ)।





चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-10 अंक 7 जनवरी, 1995

**संपादक**
*विनोद रायना*
**सह-संपादक**
*राजेश उत्साही*
*कविता सुरेश*
**संपादन सहयोग**
*टुलटुल विश्वास*
**कला-सज्जा**
*जया विवेक*
**उत्पादन/वितरण**
*कमलसिंह, मनोज निगम*



**चकमक का चंदा**
*एक प्रति : पांच रुपए*
*छमाही : पच्चीस रुपए*
*वार्षिक : पचास रुपए*
**डाक खर्च मुफ्त**
*चंदा, मनीआर्डर या बैंक ड्राफ़्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।*
**कृपया चेक न भेजें।**

कागज़ : यूनिसेफ के सौजन्य से।



**पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता**
**एकलव्य,**
**ई-1/25,**
**अरेरा कॉलोनी,**
**भोपाल-462016**
**(म. प्र.)**
**फ़ोन : 563380**




भावना बेपारी, तीसरी, राजपुर, सरगुजा, म.प्र.

## 113वें अंक में...

*विशेष*



*कहानी*



*धारावाहिक*



*हर बार की तरह*



*और यह भी*



*आवरण परिचय*

'सीखने का मज़ा' अभियान के राष्ट्रीय उत्सव में बना-पिरामिड, जो प्रकाश से जगमगा रहा है।

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

मेरा पन्ना

# घूमने गए



सत्येन्द मिश्रा, चौथी, दिल्ली

हम घूमने जाने लगे
सर्दी बहुत थी उस दिन
गाना गाती मैं रास्ते में
ठंडी ठंडी हवा
मन को लुभाती है
कभी मैं दौड़ती
कभी मैं धीरे चलती थी।
रंग-बिरंगे फूल देखकर
मेरा मन खुश हो जाता था
कोयल की आवाज़ सुनने को
मेरा मन बहुत ललचाता था।
चिड़ियों की चहचहाहट बहुत ही
अच्छी लगती मुझे थी।
हम घूमने जाने लगे
सर्दी बहुत थी उस दिन।

❑ दर्शना मुजाल्दा, छठवीं,
होलीपुरा, धार, म.प्र.

# परीक्षा व मिठाई

मैं परीक्षा के नाम से हमेशा ही बहुत डरती थी। फिर वह भी पाँचवीं बोर्ड। डर के मारे कुछ भी न सूझता था। तभी किसी से सुना कि परीक्षा के दिन मिठाई-दही खाकर जाने से पेपर अच्छा बनता है। मैं भी चुपचाप दो पीस मिठाई खरीद कर ले आई। और उसे छुपा कर अपने कपड़ों की पेटी में रख दिया कि कठिन विषय के दिन खाऊँगी जैसे गणित, विज्ञान, भूगोल आदि।

लेकिन मैं रोज़ सुबह जाते समय सोचती कि 'आज तो सब याद है, कल खाऊँगी।' ऐसा करते-करते मेरे सभी पेपर बहुत ही बढ़िया बने और मैं परीक्षा में अच्छे नम्बरों से पास भी हो गई। परीक्षा के बाद मैंने वह मिठाई बाहर फेंक दी क्योंकि उसमें फफूंद जम गए थे और मेरा यह भ्रम भी टूट गया कि दही मिठाई खाने से अच्छा पेपर बनता है।

❑ निहारिका शर्मा, छठवीं, कुसमी, दुर्ग, म.प्र.




# पिकनिक

**गर्मी** की छुट्टी में मैंने एक दिन अपने साथियों के साथ पिकनिक जाने की योजना बनाई। फिर दूसरे दिन हम सुबह छह बजे घर से निकले। हम वहाँ साढ़े छह बजे पहुँच गए। वहाँ गरिमा नदी का एक छोटा-सा जलप्रपात जैसा है। जिसे रानी दाह कहते हैं। हमने वहाँ दस बजे अपना भोजन किया। फिर थोड़ी देर आराम करके खूब नाचे और गाए। आँख मिचौनी का खेल खेले और हमने वहाँ खूब आनन्द लिए। शाम पाँच बजे हमने घर वापस लौट आए।

तुलसीराम बघेल, आठवीं, पतराटोली, रायगढ, म.प्र.



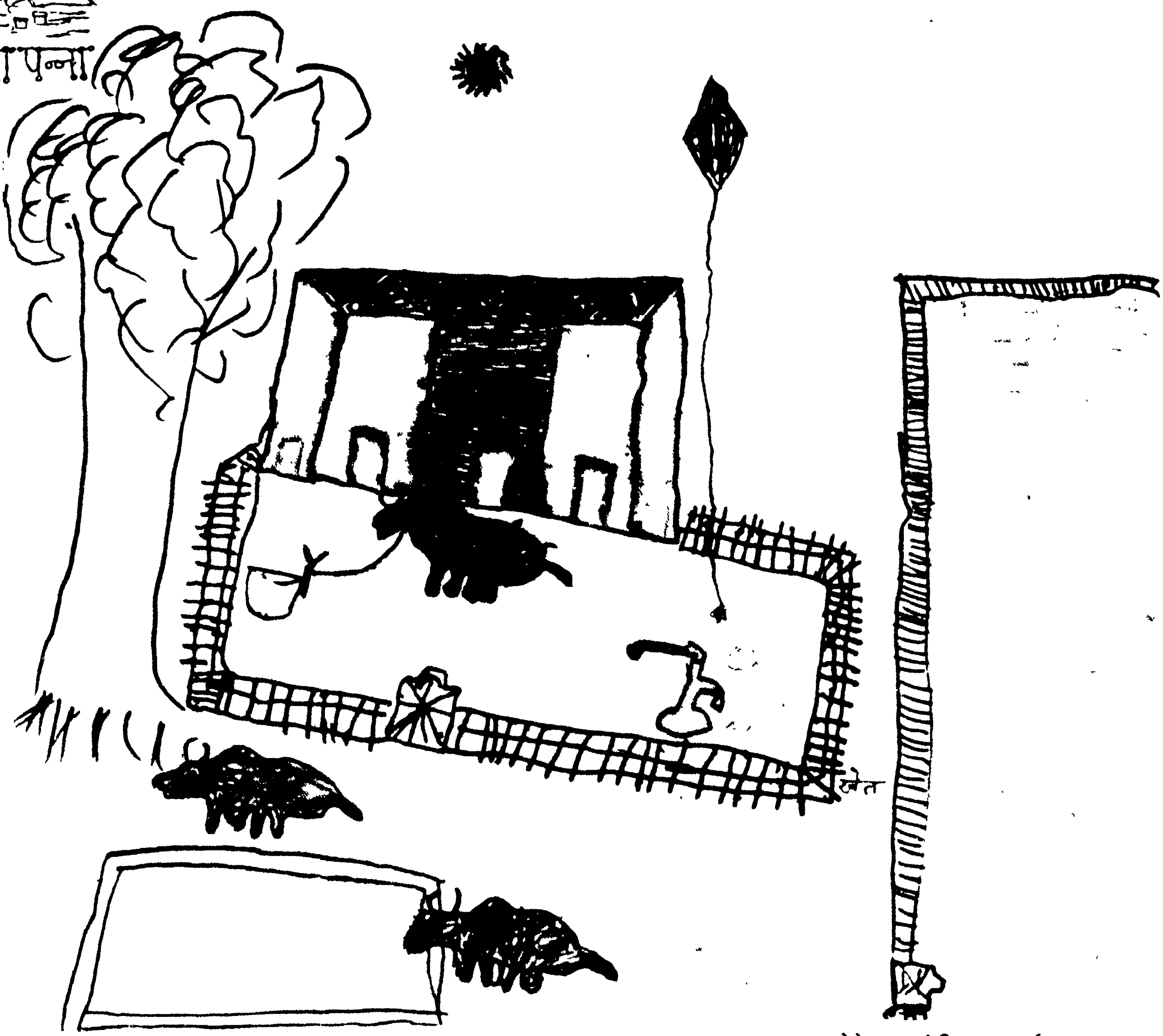
शशि बड़कुर, छठवीं, आर्डनेंस फैक्टरी, इटारसी, म.प्र.

# नानी की चिट्ठी

**मुझे मेरी नानी बहुत सारी चिट्ठियाँ लिखती हैं। वो चिट्ठियों में कहानी (छोटी-छोटी) लिखती हैं। बहुत सारे चुटकुले भी लिखती हैं। दो हफ्ते से नानी की चिट्ठी नहीं आई। मैं इन्तजार करती रहती हूँ।**

**अब पच्चीस दिन हो गए। आज मुझे डर लग रहा था। वो बीमार तो नहीं हो गई हैं। उन्हें कोई मुसीबत तो नहीं। रोज चिट्ठी लिखने वाली नानी ने इतने दिनों से चिट्ठी क्यों नहीं लिखी? मैं बैठी थी। तो मैंने देखा बाहर डाकिया आया। मैं दौड़ कर बाहर गई। देखा नानी की चिट्ठी आई है। उन्होंने बम्बई की बहुत सी बातें लिखी थीं। इतने दिन से उनकी चिट्ठी नहीं आई थी क्योंकि वे बम्बई गई थीं। उनकी चिट्ठी देखकर मैं खुश हो गई।**

**चारू, चौथी, पटियाला, पंजाब**




योगेश रघुवंशी, सात वर्ष, हरदा, म.प्र.

## *हमारा खेल*

मैं मेरे मामाजी के यहाँ गर्मियों की छुट्टियाँ मनाने गई। एक बार हम बैल-बैल का खेल खेल रहे थे। हमने मेरे मामाजी के लड़कों को बाँध दिया। हमारे मामाजी के यहाँ एक बैल बहुत मारता था। हम खेल रहे थे इतने में वह बैल आ गया। हम सब भाग गए। पर मामाजी के लड़के बंधे हुए थे। बैल उनके पास गया और उन्हें मारने लगा।

फिर हमारे दादाजी आए। उन्होंने उस बैल को भगाया और उन्होंने हमको समझाया। उन्होंने कहा कि ऐसे खेल नहीं खेलने चाहिए।

❑ जयश्री, बारह वर्ष,
खुदिया, म.प्र.




# जामुन खाने चले

**बहुत** पुरानी बात है। एक दिन शाम को मैं घूमने निकला। मुझे एक जामुन का पेड़ मिला। मैंने सोचा थोड़े-बहुत जामुन खा लें। मैं पेड़ के ऊपर चढ़ा। जामुन अच्छे लग रहे थे। मैंने मेरी पैन्ट के दोनों जेब भर लिए। मुझे पता नहीं था कि मेरे पैन्ट के जेब फट रहे थे।

जामुन के पेड़ के नीचे बगीचे का मालिक आ गया। मेरे फटे पैन्ट में से जामुन निकले और मालिक के सिर पर लगी। मालिक चिल्लाया, "अरे कौन है ऊपर?" मैं डर के मारे नीचे गिर गया।

फिर मैं खड़ा हुआ। मालिक ने कहा, "सारे जामुन निकालो।" मैंने डर के मारे सारे जामुन निकाले। मालिक ने कहा, "दूसरे जेब के भी निकालो।" मैंने कहा कि, "दूसरे जेब के जामुन आपके सिर पर गिर गए।"

❑ गोविन्द प्रसाद शर्मा, बालागुडा, मन्दसौर, म.प्र.



माधुरी लोहकरे, सातवीं, वर्धा, महाराष्ट्र



विवेक सिंह मौर्य, तजपुरा, होशंगाबाद, म.प्र.

# बन्दर और कुत्ता

**मेरे** घर के सामने एक खिड़की थी। उस घर के अन्दर रहने वाले आदमी दयालु थे। एक बार क्या हुआ, एक बन्दर उस खिड़की के पास गया। उस आदमी ने एक रोटी दी। बन्दर रोज़ाना उस खिड़की के पास आता था। और एक रोटी ले जाता था।

मेरे घर के वहाँ भी खिड़की थी। मैं भी रोज़ाना खिड़की के अन्दर रोटी रख लेता था। और बन्दर लेकर खा लेता था। एक बार क्या हुआ, मैं रोटी खिड़की के अन्दर रखकर चला गया। एक कुत्ता आया, खिड़की के अन्दर घुसकर रोटी खा ली। मैंने सोचा कि बन्दर आज जल्दी आया, रोटी खाके चला गया है। फिर खिड़की के अन्दर मैं बैठा था। उधर बन्दर आया। वह मेरे पर गुस्सा कर रहा था। मैंने कहा, ''तुम वापस आ गए क्या?''

बन्दर ने कहा, ''आज तुमने रोटी क्यों नहीं रखी?''

मैंने कहा, ''मैंने रोटी रखी थी।''

मैंने सोचा कुत्ता आया होगा। दूसरे दिन रोटी रखकर मैं छिप गया। कुत्ता आया और रोटी खाने लगा। मैंने लकड़ी से उसे पीटा। फिर कुत्ता कभी न आया।

❑ जगदीश भागवत, तीसरी,
ओगना, उदयपुर, राजस्थान




# ठंडी हवा का झोंका


प्रमोद साकल्ले, भादूगाँव, होशंगाबाद, म.प्र.

आया आया एक हवा का झोंका
ठंडी-ठंडी हवा का झोंका
मन को मोह ले गया ठंडी हवा का झोंका
गर्मी में मन को भा जाता, सर्दी में न भाता
गर्मी में कहते आ जाए कहीं से फिर एक
ठंडी हवा का झोंका।

जब हम हो जाते थककर चूर
पसीने से भरपूर
फिर एक चाह होती मन में, आ जाए कहीं से
ठंडी हवा का झोंका।
मन में भी महसूस होता आ गया
एक ठंडी हवा का झोंका।

फिर आ जाती वर्षा ऋतु
रिम-झिम-रिम-झिम बूँदें गिरतीं
दूर जहाँ तक देखो नज़र आते लहलहाते खेत
गीली घास में खेलने का आनन्द आ जाता।

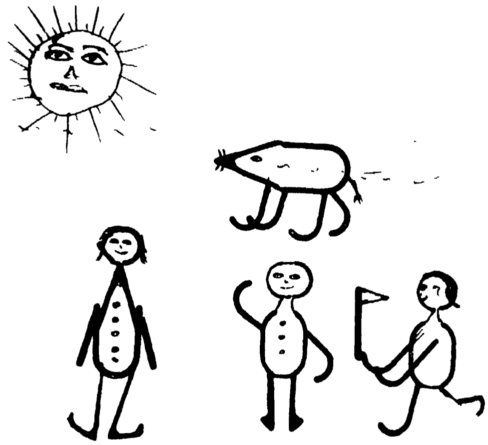
फिर आ जाता सर्दी का मौसम
दुबके रहते घर के अन्दर
सब पहनते रंग-बिरंगे स्वेटर।

फिर आ जाती बसन्त ऋतु
खिल उठते फूल व पशु
पक्षियों का चहचहाना मन को लुभाता
नाच उठता हमारा मन, खेल खेलें दिन भर हम
फिर आ जाती ग्रीष्म ऋतु
फिर सब चाहते वही ठंडी हवा का झोंका।

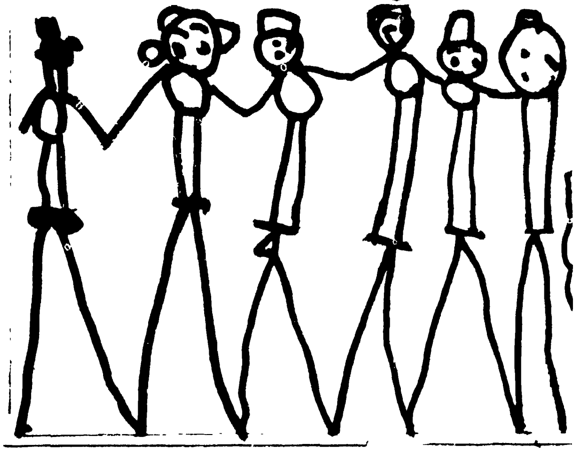
❑ कमलजीत, सातवीं, फालना, पाली, राजस्थान



अंकिता नाकराली, चार वर्ष, जंगर, गुजरात



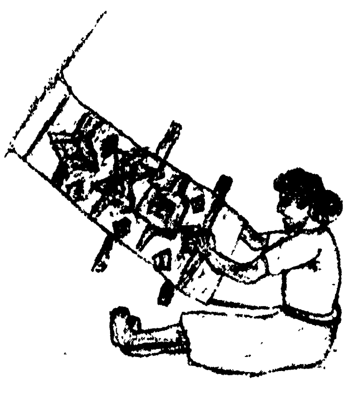
गोविन्द सिंह चौहान, रामपुरा, मन्दसौर, म.प्र.

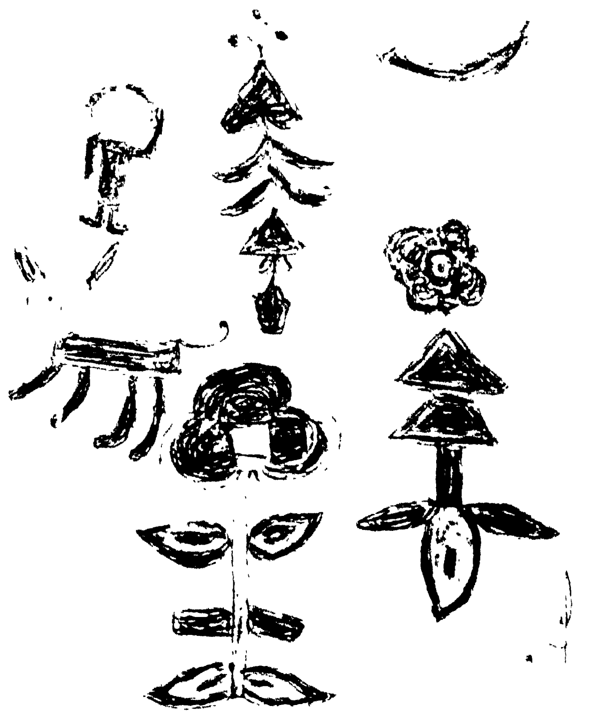


अमेय कांत, अरलावदा, देवास, म.प्र.



नीता अग्रवाल, सातवीं, खारदा।





8 मूनलोप योगराम, पन्द्रह वर्ष, खरसांग, अरूणांचल

देव कल्याणी, तीसरी, किरगी, राजनांदगाँव, म.प्र.

चकमक समाचार

# 'सीखने का मज़ा' का राष्ट्रीय उत्सव



सात से चौदह नवम्बर, 94 तक दिल्ली में भारतीयम का स्काउट कॉम्पलेक्स नई लकदक के साथ आकर्षण का केन्द्र बना रहा। जहाँ गेट पर आगंतुकों का स्वागत काग़ज़ की लुगदी से बने मोर और चिड़ियों ने किया, वहीं अन्दर पेड़ों और रस्सियों पर टँगी रंगी-बिरंगी कपड़ों की झण्डियों, बाँस की बल्लियों का बना विशाल पिरामिड, ढेर सारे मुखौटे और तरह-तरह की पोशाकों तथा अलग-अलग बोलियों वाले विभिन्न राज्यों के जोश से भरे बच्चे सभी का मन मोहे हुए थे। सब तरफ उत्सव का सा माहौल था और यह अवसर था 'सीखने का मज़ा' अभियान का राष्ट्रीय उत्सव।

आगे बढ़ने से पहले 'सीखने का मज़ा' के बारे में भी कुछ जानते चलें। करोड़ों बच्चो के लिए आज भी स्कूल एक सपना है और जो बच्चे स्कूल पहुँच भी जाते हैं उनमें से बहुत-से कभी भी पढ़ाई से जीवत रिश्ता नहीं बना पाते हैं। पढ़ाई उनके लिए एक बोझ, मुसीबत ही बनी रहती है। यह व्यवस्था अब और बच्चों को पढ़ने के सुख से दूर न रखे, समाज और बच्चों से मज़ेदार शिक्षा की माँग उठे, यह सोच कर 'सीखने का मज़ा' अभियान की शुरुआत हुई। इस के तहत देश भर में बाल मेले किए जाएँगे। ये ज़िला, ब्लाक व पंचायत स्तर तक होंगे। पढ़ाई कैसे खेल-खेल में मज़े से हो सकती है। इसका अन्दाज़ मेले में होने वाली गतिविधियों से हो सकता है। इन्हीं बाल मेलों की प्रथम कड़ी था यह राष्ट्रीय बाल मेला। इसमें विभिन्न राज्यों के एक हज़ार बच्चे, 250 स्त्रोत व्यक्ति और शिक्षा से सरोकार रखने वाले कलाकार, बुद्धिजीवी, वर्तमान स्कूली शिक्षा व्यवस्था में बदलाव की माँग और उम्मीद के साथ शामिल हुए।

7 नवम्बर को मेले का शुभारम्भ रंग-बिरंगे गुब्बारे छोड़कर किया गया। प्रासंगिक शिक्षा की माँग को बच्चों ने एक गाने के ज़रिए प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम का एक और आर्कषण था केरल के बच्चों द्वारा प्रस्तुत नाटक 'प्रोडक्ट' जिसमें जड़ हो चली 'शिक्षा की मशीन' से पैदा हुए मजबूर, अपाहिज बच्चों की व्यथा दर्शाई गई थी।

इस मेले में बच्चों को अपने आप को अभिव्यक्त करने का पूरा मौका मिला। ज़मीन पर फैली बडी सफ़ेद और कोरी प्लास्टिक शीट देखते-देखते पेड़, फूल, हाथी, पहाड़, टीचर, चिडियां घर ... से ढक जाती और रंग जैसे वहाँ से छिटककर पूरे माहौल में फैल जाते। बाद में इस शीट को भारतीयम के प्रांगण में बने पिरामिड पर लगा दिया जाता। काम चाहे रंग बिरगे रिबन लगे डंडो को पकड़कर नाचना हो या बेकार कबाडी चीज़ों से बने खिलौनों के माडलों से विज्ञान के सिद्धान्त को समझना, बच्चों का उत्साह देखते ही बनता था। कक्षा में मुश्किल-सी लगने वाली कई चीज़ो को यहाँ पेड़ के नीचे बैठ खुद करके जानना बहुतों के लिए नया अनुभव था।

बाल मेले में चार नई गतिविधियों को भी शामिल किया गया था। इतिहास यात्रा, रसोई से विज्ञान, टक्नॉलॉजी और नृत्य। इतिहास यात्रा में भारतीयम के आसपास के ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थानों (जैसे हुमांयूँ का मकबरा) पर बच्चों को ले जाकर उनके बारे मे बताया जाता था। टक्नॉलॉजी कोना साइकिल के विभिन्न हिस्सों के पीछे के विज्ञान की खबर लेता और 'रसोई से विज्ञान' रसोई में ही प्रयोगशाला के दर्शन करवाता। साथ ही सभी को यहाँ कुछ-कुछ खाने को भी मिलता।

कम से कमतर होती जा रही शरीर की हरकतों को बनाए रखने की ज़िम्मेदारी संभाली नृत्य और मूकाभिनय वाले कोने ने। लम्बे-लम्बे रंग-बिरंगे रिबन लगे डंडों को हाथ में ले कई तरह के खेल खेलते, खुशी से सराबोर बच्चों को देखना बेहद सुखद अहसास था। इसके अलावा बाल मेले में

कुछ और भी गतिविधियाँ थीं। जैसे- मज़ेदार विज्ञान के प्रयोग, गणित के खेल, कागज़ के खिलौने, अपना शरीर जानिए।

ढेर सारे प्रश्न, बीच-बीच में मस्ती, चुहलबाज़ी के साथ बच्चे समूहवार विभिन्न गतिविधियाँ करते। समूहों के नाम भी कम मज़ेदार नहीं थे। बच्चे कहीं मटर, टमाटर का बैनर उठाए थे तो कहीं उल्लू, या गौरैया मस्ती से चलते दिख जाते। शाम के डेढ़ घण्टे का समय बीस अन्य कोनों में जाने का होता जहाँ सभी अपनी मर्ज़ी से जा सकते थे। कुछ कोने यूँ थे - पतंग, खिलौने, कठपुतली, मुखौटे बनाना, मिट्टी की चीजें बनाना, चित्रकारी, बढ़ईगिरी, कविता-कहानी लिखना - आदि। न जाने कितने ऐसे बच्चे थे जिन्हें पहली बार अपनी पसन्द अभिव्यक्त करने और अपनी चाह को पूरा करने का मौका मिला था।

इसके अलावा एक कोना दिल्ली के वैज्ञानिकों से बातचीत का था। ढेर-ढेर से सवालों से अटे पड़े बच्चों के दिमागों को जैसे एक मौका मिल गया था। चाँद गिरता क्यो नहीं है? रेल की लाइन के आस-पास पत्थर क्यो डाले जाते हैं? बिना खाने के बजाए बिना पानी के आदमी जल्दी क्यो मर जाता है? प्रश्नों की बाढ थी। उत्तर भी थे। अब आगे ऐसे प्रश्न किसी भी तरह उत्तर पा लेगे, यह विश्वास हो चला था।

विभिन्न राज्यों, मज़हबों और भाषा के बच्चे आपस में एक-दूसरे को जानें, इसके लिए देश भर से आए बच्चों के रहने की व्यवस्था दिल्ली के बच्चों के घरों में की गई थी। इस तरह 500 मेहमान बच्चो की सात दिन के रहने और खाने का सारा जिम्मा 500 मेज़बान घरों ने उठाया। मेहमान-मेज़बान हर रोज़ सुबह साढ़े आठ बजे घर से साथ साथ आते, और दिन भर साथ रहते और शाम को पाँच बजे घर चले जाते।

इस महोत्सव की एक बहुत ही महत्वपूर्ण घटना रही पन्द्रह सौ बच्चों, बड़ो की रंग-बिरंगे बैनर, मुखौटे, टोपियों से सजी यादगार रैली। क्या बच्चे क्या बड़े - सभी का जोश फूट-फूट पड़ रहा था।

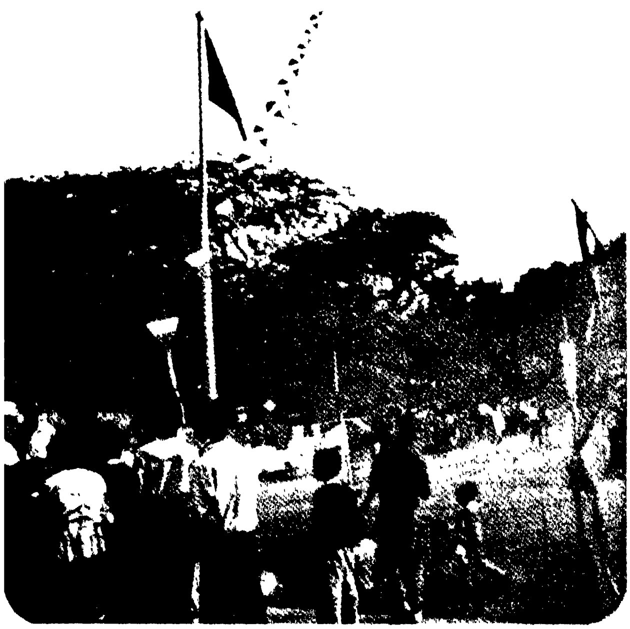
"हमारी शिक्षा कैसी हो
मज़ेदार हो मज़ेदार हो।"
"We Want
Joy of Learning"

जैसे नारों ने दिल्लीवासियों को बच्चों की माँग पर सोचने को ज़रूर मजबूर किया होगा। जन्तर-मन्तर से शुरू होकर कोई एक किलोमीटर दूर शास्त्री भवन में रैली खत्म हुई। जहाँ बच्चों ने केन्द्रीय शिक्षा मंत्री को ज्ञापन दिया।

'हम बच्चे माँग करते हैं कि हम सभी को स्कूल जाने का मौका मिले और हमारी शिक्षा मज़ेदार और प्रासंगिक हो।'

साथ ही बच्चों ने दीवार पर भारी बस्ते टाँगकर वर्तमान शिक्षा के प्रति विरोध प्रगट किया।

चौदह नवम्बर को बच्चों ने पिरामिड के सामने बने मंच पर रगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया। उत्साह का माहौल चरम सीमा पर था। बच्चों के बीच उपहार, पतों का आदान-प्रदान हो रहा था। आगे भी दोस्ती जो रखनी थी।

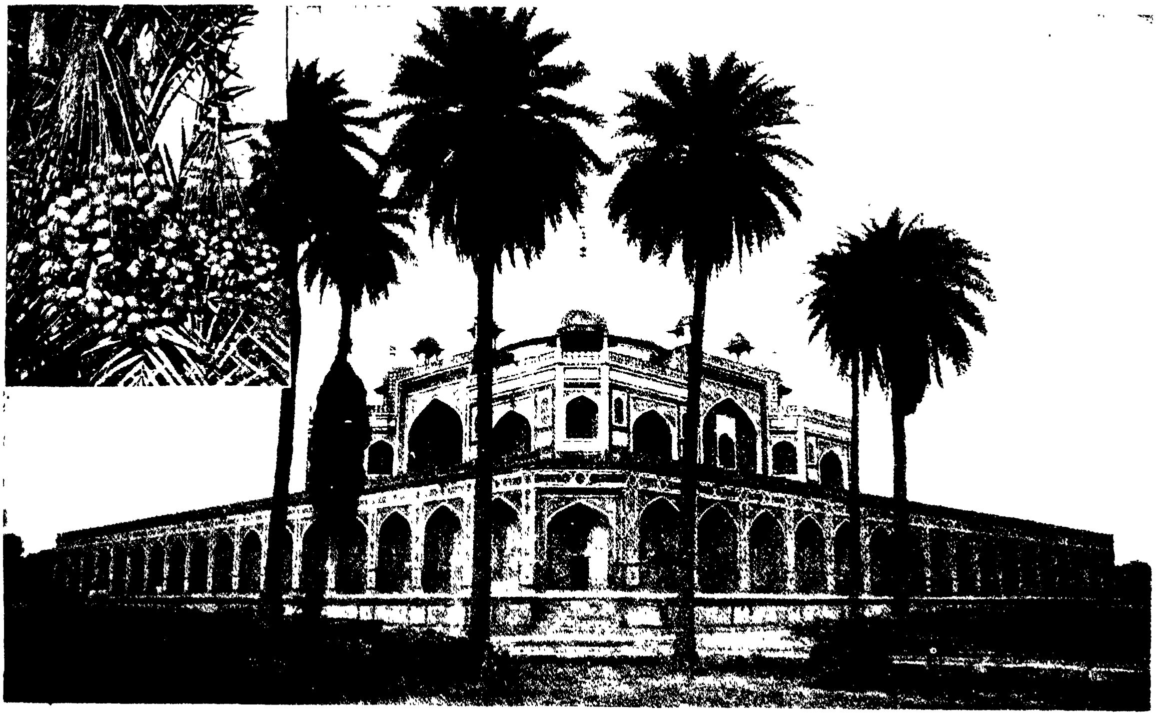


इसी दिन दोपहर को जवाहर बाल भवन और राजीव गांधी मिशन का विज्ञान भवन में प्राथमिक शिक्षा पर कार्यक्रम था। आयोजको ने बाल उत्सव में आए 500 बच्चों और 200 स्रोत व्यक्तियों को आमन्त्रित किया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री व अन्य कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। इस कार्यक्रम मे बिहार से आए एक बच्चे राष्ट्रबिहारी और तमिलनाडू की अनीता ने भाषण दिया। राष्ट्रबिहारी ने प्रधानमंत्री को ज्ञापन भी दिया।

एक विश्वास बंधा है मनचाही शिक्षा पा लेने का।

**रपट : शशि सबलोक**

# खजूर



*अपने आसपास के जंगलों या खेतों में तुमने एक प्रकार का लम्बा-सा पेड़ देखा होगा जिसके तने पर टहनियाँ नहीं रहतीं, जिसके ऊपरी सिरे पर काँटेदार पत्तियों का गुम्बद होता है। जिसे देखकर कबीर का यह दोहा भी याद आ जाता होगा -*

*बड़ा हुआ सो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।*

*पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर॥*

*इस दोहे ने तो खजूर के पेड़ को बिना काम का करार दिया, पर खजूर तो तुमने भी कभी-न-कभी खाया ही होगा। इस पेड़ की कई प्रजातियाँ हैं जिनमें से सात भारत में भी पाई जाती हैं। ठण्ड के दिनों में बाज़ार में जो खजूर (पिण्ड खजूर) तुम देखते हो वह इनमें से एक है।*

*खजूर का पेड़ बहुत पुराने समय से ही गर्म एवं सूखे इलाकों में पाया जाता रहा है। वैसे यह मूल रूप से खाड़ी देशों का निवासी है। वहीं से यह पेड़ उत्तर पूर्व अफ्रीका और दक्षिण पश्चिम एशिया में फैला है। व्यावसायिक फसल के रूप में खजूर ईराक, संयुक्त राज्य अरब, पश्चिमी पाकिस्तान, अमेरिका के गर्म प्रदेशों आदि में पैदा किया जाता है। भारत में यह गुजरात, राजस्थान, पंजाब, मध्यप्रदेश, आंध्रप्रदेश, उडीसा आदि राज्यों में मिलता है।*

*खजूर के पेड़ का कद बहुत ऊँचा होता है। इसकी लम्बाई 36 मीटर तक हो सकती है। तना सीधा और पत्तियों के सूखे डंठलों से घिरा होता है। तने के निचले हिस्से में ज़मीन के पास नई, छोटी पत्तियाँ फैली रहती हैं। खजूर की पत्तियाँ हल्के हरे रंग की और कई छोटी उपपत्तियों में बँटी होती हैं। ये उपपत्तियाँ एक कठोर डंठल के दोनों ओर लगी होती हैं। यह डंठल पाँच मीटर तक लम्बा हो सकता है। उपपत्तियों का आकार लम्बा (लगभग 6-7 से.मी. से 14-15 से.मी. तक), नीचे से ऊपर की ओर सँकरा होता हुआ और ऊपर की ओर नुकीला होता है।*

*फूल छोटे-छोटे, लाल रंग के होते हैं जो छोटे-छोटे डंठलों में अलग-अलग लगे होते हैं। पर ये डंठल एक झुण्ड के रूप में शाखाओं में लगे होते हैं। फूल मार्च-अप्रैल के महीनों में लगना शुरू होते हैं। इसके बाद फल लगते हैं। फल के बढ़ने के समय को चार चरणों में बाँटा जाता है - गोदेश, डोका, डेंग और पिण्ड। अरब देशों में इन्हीं चार चरणों को कीमरो, खलाल, रूताब और तामर नाम से जाना जाता है।*

*गोदेश चरण में फूल फल का आकार ले लेता है और तेज़ी से बढ़ता है। इस चरण में फलों का रंग गहरा हरा होता है। दूसरे चरण में फल पूरी तरह बढ़ जाता है और इसका रंग लाल या पीलापन लिए हुए लाल होता है। डेंग या तीसरे चरण में फल किनारों पर नरम होने लगता है और इसके बाद से यह खाने लायक हो जाता है। चौथे या अंतिम चरण में फल पूरी तरह से पक जाता है और इसके बाद यह सूखने लगता है।*

*खजूर के फल अगस्त के बाद पकना शुरू होते हैं और पूरे जाड़े के दौरान बाज़ार में मिलते हैं। पका फल इन दिनों बाज़ार में बिकता हुआ शायद तुमने देखा होगा। यह अण्डाकार होता है और लम्बाई में 2.5 से.मी. से लेकर कभी-कभी तो 7.5 से.मी. तक होता है। इसका रंग कत्थई लाल होता है। खजूर के पेड़ में फल, पेड़ लगने के चार से दस साल के बाद लगना शुरू होता है। इस मीठे स्वाद वाले फल में कार्बोहाइड्रेट (शर्करा) और खनिज तत्व प्रचुर मात्रा में मिलते हैं।*

*खजूर के फल का उपयोग अरब में तो भोजन के खास हिस्से की तरह किया जाता है। इसके अलावा इसका उपयोग बेकरी में भी किया जाता है। खजूर का गुड़, अचार और लौंजी भी बड़ी ज़ायकेदार होती है। इसका औषधि के रूप में भी उपयोग किया जाता है। खजूर का बेलनाकार बीज भी काम में लिया जाता है। इन्हें पानी में भिगोकर, नरम करके ऊँट, भेड़ और घोड़ों को खिलाया जाता है। बीज से तेल भी निकाला जाता है। सूखे बीजों से एक प्रकार का अम्ल भी बनाया जाता है।*

*खजूर के पेड़ के तने में गोल काट लगाकर उसका रस या गाबा इकट्ठा करके उसका दवाई के रूप में उपयोग किया जाता है। पत्तियों का उपयोग भी चटाई, डलिया, पंखे, झाडू आदि बनाने में किया जाता है। खजूर की लकड़ी हल्की होती है पर घर बनाने या पुल बाँधने में यह काम आती है। अंग्रेज़ी में इसे डेट पाम (Date Palm) कहते हैं।*

*लेख के शुरू में दिया चित्र दिल्ली में हुमायूँ के मकबरे का है। मकबरे के सामने खजूर के पेड़ लगे हैं। चित्र 'इमेजेस् ऑफ इण्डिया' से साभार ।*

⊔⊔



## हमारे रचनाकार

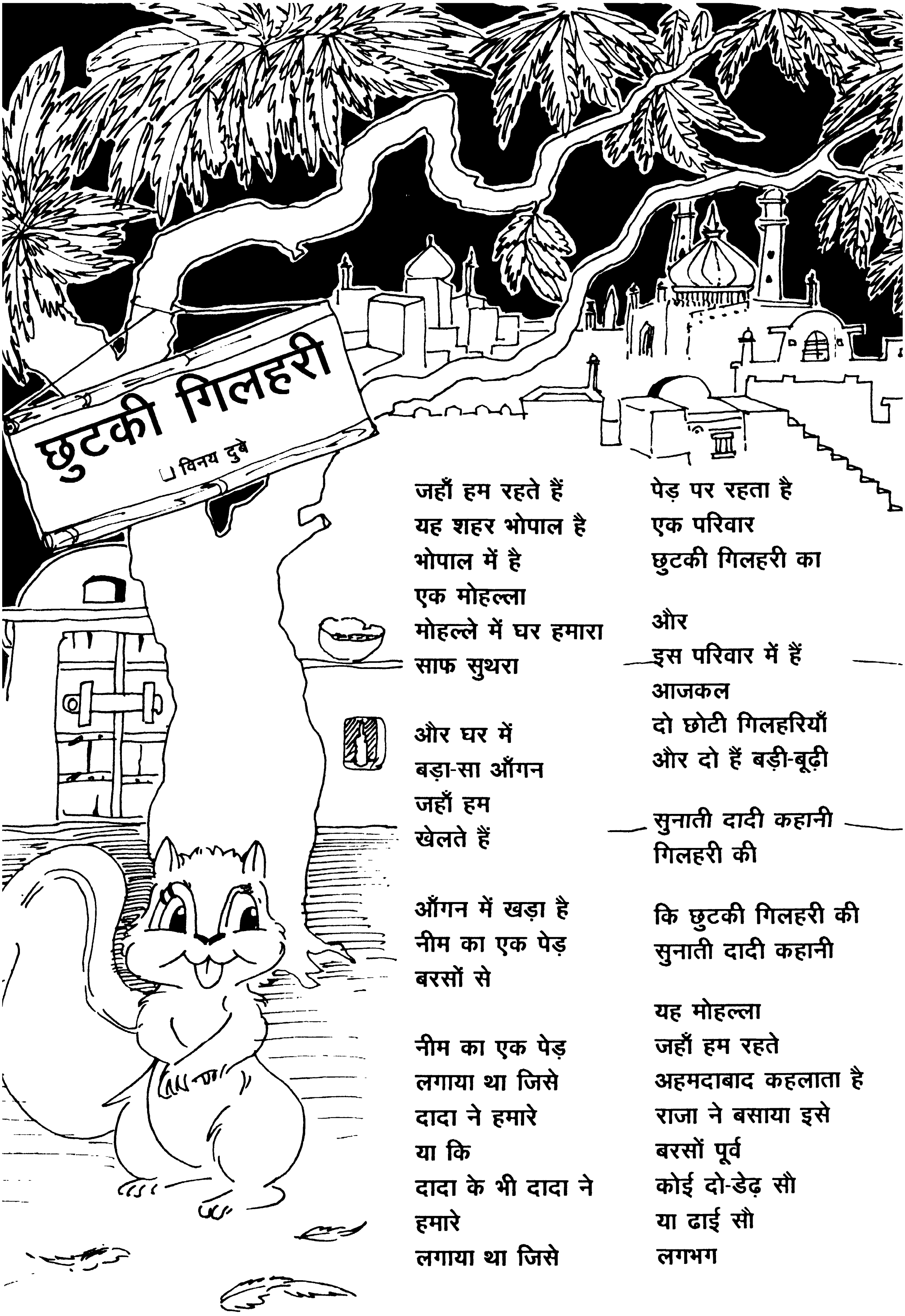
**इस अंक में प्रकाशित लम्बी कविता छुटकी गिलहरी के रचनाकार - श्री विनय दुबे की बच्चों के लिए लिखी अन्य कविताओं का एक संग्रह *भों भों म्याऊँ* शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। मूलतः वे बड़ों की कविताओं के लिए जाने जाते हैं। उनके कविता संग्रह हैं - *महामहिम चुप हैं; सपनों में आता है राक्षस* और *खलल*। *'नारायणपुर'* शीर्षक से उनका एक काव्य नाटक भी प्रकाशित हुआ है। कविता के अलावा वे अनुवाद तथा समीक्षाएँ भी करते हैं।**

**वर्तमान में वे भोपाल के सेफिया कला, वाणिज्य एवं विधि स्नातकोत्तर महाविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक हैं।**

**उनका पता है : *कॉटेज नं. 3, अहमदाबाद पैलेस रोड, भोपाल, म.प्र.।***

# छुटकी गिलहरी

विनय दुबे



जहाँ हम रहते हैं
यह शहर भोपाल है
भोपाल में है
एक मोहल्ला
मोहल्ले में घर हमारा
साफ सुथरा

और घर में
बड़ा-सा आँगन
जहाँ हम
खेलते हैं

आँगन में खड़ा है
नीम का एक पेड़
बरसों से

नीम का एक पेड़
लगाया था जिसे
दादा ने हमारे
या कि
दादा के भी दादा ने
हमारे
लगाया था जिसे

पेड़ पर रहता है
एक परिवार
छुटकी गिलहरी का

और
इस परिवार में हैं
आजकल
दो छोटी गिलहरियाँ
और दो हैं बड़ी-बूढ़ी

सुनाती दादी कहानी
गिलहरी की

कि छुटकी गिलहरी की
सुनाती दादी कहानी

यह मोहल्ला
जहाँ हम रहते
अहमदाबाद कहलाता है
राजा ने बसाया इसे
बरसों पूर्व
कोई दो-डेढ़ सौ
या ढाई सौ
लगभग

बड़े तालाब के
तट पर
बनाया यहाँ
नूरुस्सबा
राजा ने
महल अपना
या रनिवास
नूरुस्सबा जिसका नाम
राजा ने
यहाँ तालाब के तट पर

महल वह
अब भी खड़ा है
खंडहर की शक्ल में

नूरुस्सबा
कहता कहानी
आप बीती
और जगबीती

दादी सुनाती है
कहानी
महल की
महल के रास्तों में
आज भी हैं पेड़
दादी बताती है

महल के रास्तों में
देशी और विदेशी
पेड़
इमली आम के
और नीम के भी
पेड़
कई इनमें

यहीं
छुटकी का हुआ था जन्म
दादी बताती है
बरसों पूर्व

छोटी थी
तो बच्चे कहा करते थे
उसे छुटकी गिलहरी
बड़े-बूढ़े भी उसे
इस नाम से ही
जानते थे

यह कहानी
उसी छुटकी गिलहरी की है
जिसे दादी सुनाती है

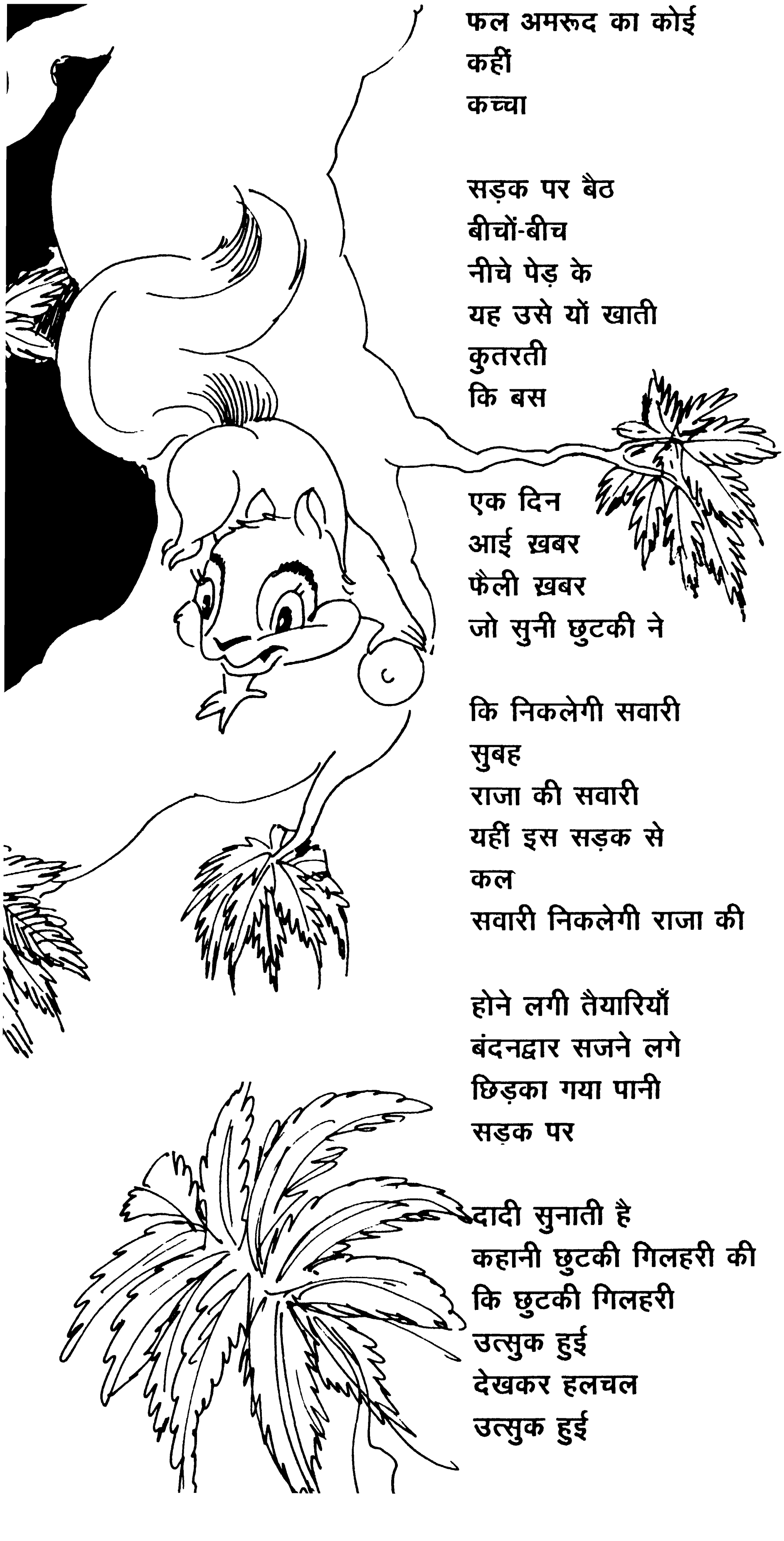
चंचल बहुत थी
छुटकी गिलहरी
बचपने में

स्कूल जाती
सहेलियों के साथ
तेज़ थी पढ़ने में
पढ़ा करती लगा अपना मन

सुबह शाम
खेलते कूदते
बीच रस्ते में
कभी तो बैठ जाती
और खुजाती कान

या फिर
कभी सुनकर कोई पदचाप
चढ़ जाती यहीं
इस नीम पर झट
सर्र से





मिल जाता कभी जब इसे
फल अमरूद का कोई
कहीं
कच्चा

सड़क पर बैठ
बीचों-बीच
नीचे पेड़ के
यह उसे यों खाती
कुतरती
कि बस

एक दिन
आई ख़बर
फैली ख़बर
जो सुनी छुटकी ने

कि निकलेगी सवारी
सुबह
राजा की सवारी
यहीं इस सड़क से
कल
सवारी निकलेगी राजा की

होने लगी तैयारियाँ
बंदनद्वार सजने लगे
छिड़का गया पानी
सड़क पर

दादी सुनाती है
कहानी छुटकी गिलहरी की
कि छुटकी गिलहरी
उत्सुक हुई
देखकर हलचल
उत्सुक हुई

राजा की सवारी
देखने के लिए
उत्सुक हुई छुटकी

जा बैठी
नहा धोके
सज
सँवरकर
वहीं एक
डाल पर
उस पेड़ की

नीम के
उस पेड़ की
एक डाल पर
जा बैठी
छुटकी गिलहरी
लिए अमरूद का फल
एक कच्चा

दोपहर के ज़रा पहले
बाँधे हाथ
खड़े हो गए लोग

बाँधे हाथ
दोनों तरफ
उस लम्बी सड़क के
खड़े हो गए लोग

इधर थी छुटकी गिलहरी
पेड़ पर
चुपचाप बैठी
देखने को
सवारी का दृश्य
बहुत आतुर



अब छुटकी
उधर

कच्चा अमरूद लिए
हाथ में
कुतरती जाती थी उसको
मौज में
बैठी डाल पर

छुटकी गिलहरी
डाल पर बैठी
कुतरती खाती कच्चा
अमरूद

गरदन उठाती छुटकी
अमरूद खाती
यों अज़ीमुश्शान से
कि बस
कि मत पूछो

दादी सुनाती है कहानी
निकली जब
राजा की सवारी
झुक गए सब लोग
बच्चे और बड़े-बूढ़े

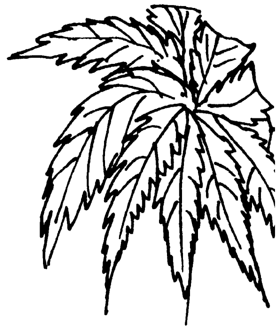
उधर
ऊपर डाल पर बैठी
छुटकी गिलहरी
भूल बैठी थी स्वयं को
देखकर के दृश्य
राजा की सवारी का
अद्‌भुत
विशाल

दृश्य
राजा की सवारी का

सवारी में
हाथी-ऊँट थे
घोड़े थे

सैनिक थे
हाथों में
नंगी तलवारें लिए

दादी सुनाती है
कहानी
बीच में राजा था सबके
बैठा एक हाथी पर

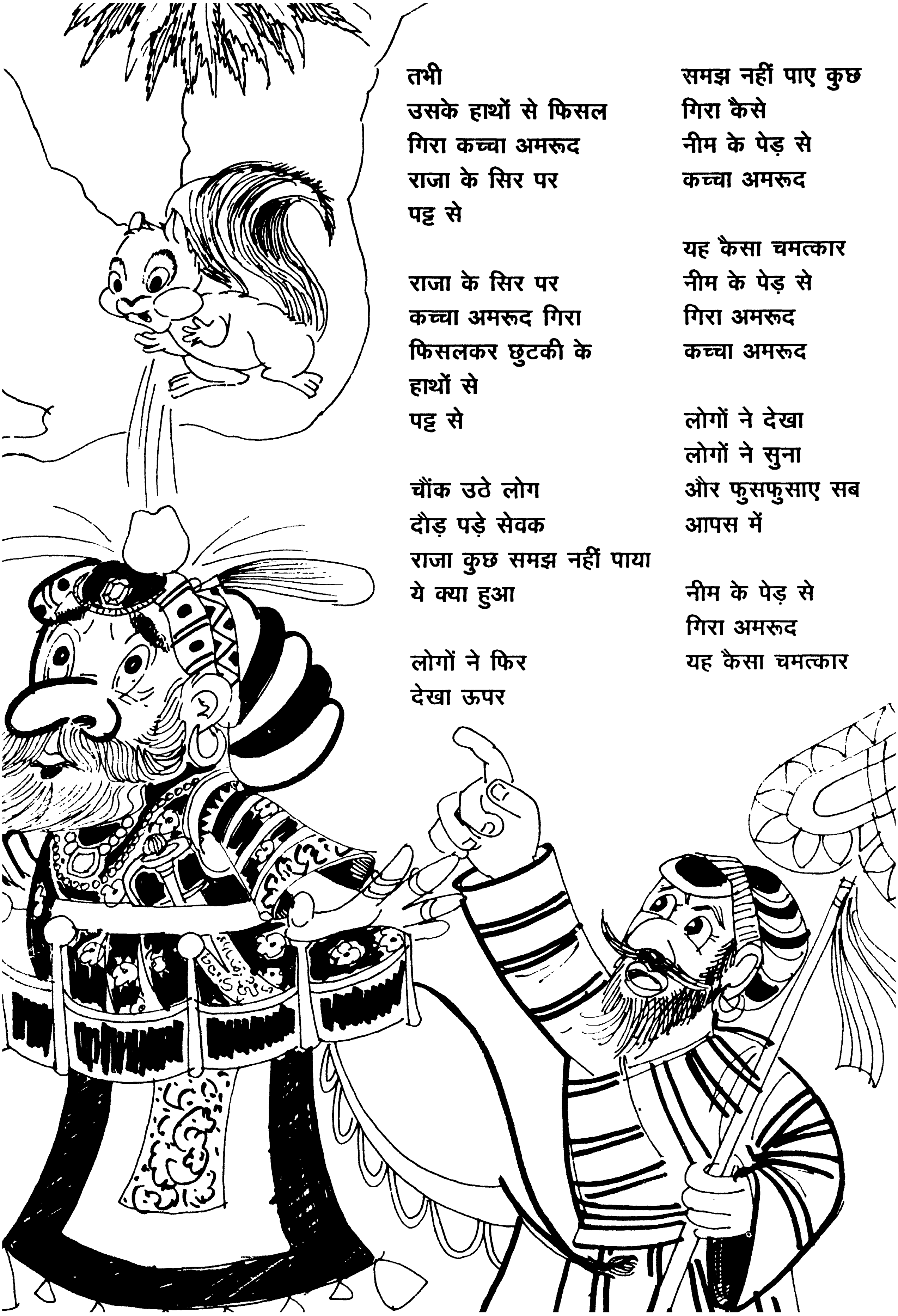


दादी बताती है

पेड़ के नीचे
आई सवारी
आया फिर राजा

छुटकी तो
देखती रह गई बस
फटी-फटी आँखों से
भौंचक्की
हुई छुटकी
राजा को देखकर





तभी
उसके हाथों से फिसल
गिरा कच्चा अमरूद
राजा के सिर पर
पट्ट से

राजा के सिर पर
कच्चा अमरूद गिरा
फिसलकर छुटकी के
हाथों से
पट्ट से

चौंक उठे लोग
दौड़ पड़े सेवक
राजा कुछ समझ नहीं पाया
ये क्या हुआ

लोगों ने फिर
देखा ऊपर

समझ नहीं पाए कुछ
गिरा कैसे
नीम के पेड़ से
कच्चा अमरूद

यह कैसा चमत्कार
नीम के पेड़ से
गिरा अमरूद
कच्चा अमरूद

लोगों ने देखा
लोगों ने सुना
और फुसफुसाए सब
आपस में

नीम के पेड़ से
गिरा अमरूद
यह कैसा चमत्कार

एक ने
दूसरे से कहा
नीम के पेड़ से
गिरा अमरूद
यह कैसा चमत्कार

दूसरे ने तीसरे से कहा
नीम के पेड़ से
गिरा अमरूद
यह कैसा चमत्कार

ऊपर बैठी छुटकी ने सुना
नीम के पेड़ से
गिरा अमरूद
यह कैसा चमत्कार
और फिर खिलखिलाकर

हँस पड़ी छुटकी गिलहरी
दूर-दूर तक फैल गई
हँसी उसकी

राजा ने सुनी
हँसी छुटकी की

लोगों ने सुनी
हँसी छुटकी की

सेवकों ने सुनी
हँसी छुटकी की

राजा ने देखा ऊपर
सबने देखा ऊपर
सैनिकों ने खींच ली
फिर अपनी-अपनी
तलवार

घबराकर भागी छुटकी
भागती छुटकी को
लोगों ने देख लिया

भागती छुटकी को
सेवकों ने देख लिया

भागती छुटकी को
राजा ने देख लिया
क्रोध से हो गई लाल-लाल
आँखें राजा की
राजा ने क्रोध में
दिया आदेश
लाओ पकड़कर
शैतान छुटकी गिलहरी को
हाज़िर करो दरबार में
इसे सज़ा देंगे हम



हाज़िर करो
छुटकी गिलहरी को
दरबार में कल
राजा ने दिया आदेश
इसे सज़ा देंगे हम

काट डालो
नीम का यह पेड़
छुटकी का बसेरा
काट डालो इसे
अभी इसी वक़्त

मिटा डालो
छुटकी का घर
अभी इसी वक़्त
राजा ने दिया आदेश

राजा का आदेश
सुना सबने

लोगों ने सुना
सेवकों ने सुना

छुटकी गिलहरी ने भी
सुना राजा का आदेश

सेवक ले आए कुल्हाड़ियाँ
लम्बे-लम्बे फालों वाली
बड़ी-बड़ी कुल्हाड़ियाँ

सेवक ले आए रस्से
बड़े-बड़े रस्से
मोटे-मोटे रस्से

फिर सबके सब
नीम के पेड़ को घेरकर
खड़े हो गए
सब के सब

दादी बताती है

छुटकी ने देखा सबको
सबकी कुल्हाड़ियों को

बड़ी-बड़ी कुल्हाड़ियों को
बड़े-बड़े रस्सों को

छुटकी गिलहरी ने
हाथी पर बैठे
राजा को देखा

सैनिकों को देखा
नंगी तलवारों को देखा

छुटकी ने सोचा कुछ
सोचकर उतर आई नीचे
नीम के पेड़ से

उतर आई
छुटकी गिलहरी

बिना घबराए
बिना डरे
साहस के साथ
छुटकी उतर आई
पेड़ से नीचे



उतर आई छुटकी
बिना डरे
बिना घबराए

बीच सड़क पर
लोगों के बीच
राजा के सामने

ठीक सामने राजा के
खड़ी हो गई आकर
जोड़कर हाथ
नवाकर माथ

फिर बोली छुटकी गिलहरी
राजा से

महाराज यह अंधेर है
अन्याय है ज़ोर जुलुम है

ग़लती यह मेरी थी
अनायास हुई जो मुझसे

अनजाने ही
हाथों से मेरे
फिसल पड़ा
कच्चा अमरूद

कहा छुटकी ने राजा से
सज़ा मुझको दें
हँसी मुझे आई

हँसने पर
सज़ा मुझको दें

कहा छुटकी ने राजा से
नीम के पेड़ को
क्यों सज़ा देते हैं
इसे क्यों कटवाते हैं
इसकी क्यों करते हैं हत्या

नीम का पेड़ तो
है निरपराध
जैसे सब पेड़
सबके सब निरपराध

लोगों को छाया देते हैं
पर्यावरण रखते हैं स्वच्छ
फल-फूल देते हैं

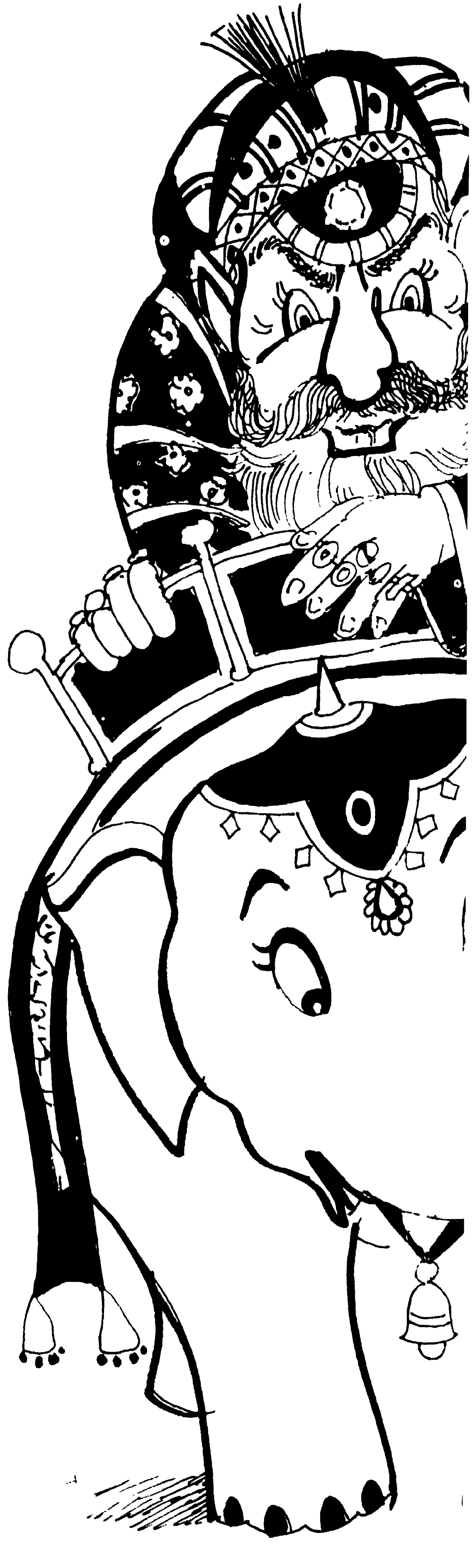
किनारे सड़क के
खड़े रहते हैं
ये जीवनदायी हैं

महाराज
सज़ा मुझको दें
हँसी मुझे आई

कहा छुटकी ने

हँसना अपराध है
आपके राज में
अगर हँसना अपराध है

तो
सज़ा मुझको दें
अपराधी मैं हूँ आपकी
मैं जीकर क्या करूँगी
आपके इस राज में
जहाँ हँसना अपराध है





हँसने पर पाबंदी है
इससे तो
मर जाना अच्छा है

आश्रय ही न रहेगा
मेरा जब
नीम का यह पेड़
तो मैं जीकर क्या करूँगी

इससे तो
मर जाना अच्छा है
सज़ा मुझको दें

पेड़ तो निरपराध है यह
कहकर
खड़ी हो गई
छुटकी गिलहरी

चिपककर
नीम के पेड़ से
दौड़कर सर्र्र से

लोगों ने देखा
सेवकों ने देखा
राजा ने देखा
जिनके हाथों में
कुल्हाड़े थे
उनने भी देखा
जिनके हाथों में रस्से थे
उनने भी देखा
छुटकी खड़ी थी
चिपक कर
नीम के पेड़ से

अब क्या होगा
सोचा सबने

लोगों ने सोचा
अब क्या होगा

सेवकों ने सोचा
अब क्या होगा

सबके सब चकित
सबके सब भौंचक्के

क्या होगा क्या होगा
सोचा सबने

छुटकी गिलहरी ने
कहा था जो कुछ
सुनकर राजा ने
सोचा क्षणभर
फिर उठा राजा
और उतरा हाथी से
राजा नीचे उतरा

पैदल चलकर
आया वह
छुटकी गिलहरी के पास
आया राजा

आकर के राजा ने
पास
छुटकी गिलहरी को
प्यार किया
पुचकारा

बोला फिर राजा
छुटकी तुम जीतीं
मैं हारा

मेरी आँखें खोल दी तुमने
मैं तुम्हें करता हूँ प्रणाम

राजा ने कहा
छुटकी गिलहरी से

राजा ने कहा लोगों से
राजा ने कहा सेवकों से

अब नहीं कटेंगे पेड़
अब नहीं मरेंगे प्राणी
निरपराध

अब नहीं होगा
राज में मेरे
यह अनर्थ
कहा राजा ने

राजा ने फिर दिया आदेश
सेवकों को

राजा ने फिर दिया आदेश
सैनिकों को

न काटे पेड़
अब कोई कहीं पर

और रक्खे ध्यान
आगे से
सताए या कि मारे नहीं




कोई
प्राणियों को

मेरा आदेश है यह
प्राणियों और पेड़ों को
रहने दें
हँसते-खेलते आज़ाद

राजा ने दिया आदेश
दादी बताती है

तब से आज तक
सब पेड़ ज़िन्दा हैं
हरे भरे हैं
यहाँ अहमदाबाद में

और गिलहरियाँ ही
गिलहरियाँ हैं
यहाँ अहमदाबाद में

नीम के पेड़ ही पेड़ हैं
यहाँ अहमदाबाद में

हम जहाँ रहते हैं
दादी सुनाती है कहानी
दादी बताती है

कभी रहा करती थी
छुटकी गिलहरी
यहाँ अहमदाबाद में
इसी मोहल्ले में
हम जहाँ रहते हैं।

❑❑

# आओ करें सर्वे
# दुधारू पशु

क्या तुम्हारे घर में मवेशी हैं? गाय, भैंस, बकरी, भेड़ या...अन्य कोई! इस बार अपन दुधारू जानवरों का सर्वे करते हैं।

गाँव में तो लगभग हर घर में हमें कोई न कोई दुधारू जानवर मिल जाएँगे। लेकिन कस्बे या शहर में ऐसे घर तलाशने के लिए थोड़ा गली-मोहल्लों में घूमना पड़ेगा। अब सर्वे करना है तो एक जगह बैठकर तो नहीं हो सकता।

सर्वे करने से पहले यह तय कर लेना ठीक होगा कि हम जो जानकारी इकट्ठी करेंगे, उसका उद्देश्य क्या है? जानकारी लेते समय हमारा नज़रिया क्या हो? कौन-से सवाल पूछें और कौन-से नहीं? हाँ एक बात का तो खास ख्याल रखना कि जिससे जानकारी ले रहे हो उसे बेवजह सलाह या नसीहतें मत देने लगना। असल में सर्वे में जो चीज़ जैसी है उसका वैसा ही विवरण लेना होता है - तटस्थ भाव से।

दुधारू पशुओं का सर्वे दो उद्देश्यों से कर सकते हो। एक तो उनसे मिलने वाला दूध और दूध से होने वाली आमदनी। दूसरे इन पशुओं को होने वाली बीमारियाँ, उनके इलाज की सुविधाएँ आदि। हम यहाँ दोनों की बात करेंगे। तुम जिस तरह से करना चाहो, चुन सकते हो।

पहले दूध और उससे होने वाली आमदनी वाला हिस्सा लेते हैं। नीचे कुछ सवाल दिए हैं। इन्हें पढ़ो और अगर तुम्हें लगता है कि कोई महत्वपूर्ण बात छूट गई है तो उसे भी सवाल का रूप देकर जोड़ दो।

पहले सवाल में तुम उस घर का अगर कोई क्रमांक हो या जिस तरह से तुम उसे पहचान सको (बच्चे के नाम से/मुखिया के नाम से/या...अन्य कोई बात) वह लिखो।

सवालों की यह सूची तुम्हें हर घर के लिए भरनी पड़ेगी।

1. प्रश्नावली नं.
2. घर का नम्बर या पहचान
3. दुधारू जानवरों की संख्या
   (क) गाय
   (ख) भैंस
   (ग) बकरी
   (घ) ...........
   (द) .........
4. कुल मादा जानवरों की संख्या
5. कुल नर जानवरों की संख्या
6. जानवरों के कुल बच्चों की संख्या
7. जानवरों को खाने में क्या देते हैं?
8. जानवरों को खिलाने पर महीने में कुल कितना खर्च आता है?
9. प्रति जानवर खुराक पर खर्च
10. खुराक के अलावा रख रखाव पर महीने का कुल खर्च
11. प्रति जानवर रख रखाव का खर्च
12. मवेशी से मिलने वाले दूध की कुल मात्रा प्रतिदिन की (जिन दिनों में वह दूध देती है)
13. घर में प्रतिदिन इस्तेमाल होने वाले दूध की मात्रा
14. बेचे जाने वाले दूध की मात्रा
15. क्या दूध से घी-मक्खन, चक्का, छाछ आदि बनाकर बेचते हैं?
    यदि हाँ, तो इससे कितनी आमदनी होती है?

आमतौर पर तुम्हें सभी सवाल पूछने नहीं पड़ेंगे। कुछ के जवाब तो अन्य सवालों से ही मिल जाएँगे। हाँ, इसके लिए थोड़ी-बहुत गणित की माथापच्ची करनी पड़ेगी। जैसे तीसरे खाने में जानवरों की कुल संख्या लिखी होगी और दसवें में महीने भर में जानवरों के रखरखाव में आने वाला खर्च। अब प्रति जानवर रखरखाव का खर्च तो तुम खुद ही निकाल सकते हो। ऐसे ही अन्य सवालों के जवाब भी मिल सकते हैं।

सर्वे के इस भाग से तुम्हें मुख्य तौर पर दो जानकारियाँ मिलेंगी। पहली यह कि दुधारू पशु

पालने में लगभग कितना खर्च आता है और दूसरी यह कि उससे आमदनी कितनी हो जाती है।

अब सर्वे का दूसरा हिस्सा लेते हैं। इसमें शुरू के सवाल (नम्बर 1 से 6 तक) तो वैसे ही रहेंगे। बाद के सवाल कुछ इस तरह हो सकते हैं-

7. आमतौर पर इन जानवरों को किस तरह की बीमारियाँ होती हैं?
8. बीमारी होने पर क्या करते हैं। किसकी सलाह लेते हैं?
9. किस तरह का इलाज करते हैं?
10. क्या आसपास कोई सरकारी पशु अस्पताल है?
11. क्या ज़रूरत पड़ने पर अस्पताल से तुरन्त मदद मिल जाती है?
12. क्या पशुओं के लिए दवा तुरन्त मिल जाती है?

ये तो थे सवालों के कुछ नमूने। सर्वे क़रने में एक और बात का ख्याल यह रखना होता है कि सवालों में ज़रूरी बदलाव की गुंजाइश हो। तुम्हें इन दिए गए सवालों में से कुछ अगर ठीक न लगें तो उन्हें बदल डालो। या सर्वे करते हुए अगर लगता है कि किसी सवाल का जवाब ठीक से नहीं मिल पा रहा है, तो उसे नए सिरे से लिख लो। कुछ नए सवाल जोड़ना चाहो तो भी खुली छूट है। आखिर यह सर्वे करना तो तुम्हें ही है। इसका ढाँचा अपनी सहूलियत/ज़रूरत के मुताबिक तैयार कर लो।

एक बात और। सर्वे की ये प्रश्नावलियाँ तुम्हें अलग-अलग घरों की बिखरी हुई जानकारी देंगी इस जानकारी को एक जगह इकट्ठी करने पर तुम जानवरों की स्थिति, पशुपालन का एक मोटा अंदाज़ भी लगा सकते हो। तुम चाहो तो इसी तर्ज़ पर एक बड़ा इलाका (एक पूरा मोहल्ला या गाँव) लेकर व्यापक सर्वे भी कर सकते हो। इससे तुम्हें उस पूरे इलाके के जानवरों की एक मोटी-मोटी जानकारी मिल जाएगी।

तुम सोच रहे होगे कि इतना लम्बा-चौड़ा सर्वे करने के बाद मिलेगा क्या? तो पहली बात यह है कि सर्वे हमेशा कुछ पाने के लिए हो, यह ज़रूरी नहीं। सिर्फ अपने आस-पास जो चीज़ें हैं, जो स्थितियाँ हैं, उनकी थोड़ी-बहुत जानकारी हमें हो, इतना भी क्या कम है। और यह जानकारी अगर हम मज़े-मज़े में इकट्ठी कर लें या यह सब करते हुए कुछ खेल-वेल ईजाद कर लें - फिर तो सोने पे सुहागा!

वैसे इतना बता दें कि यह सर्वे अगर तुम करते हो तो तुम्हारे बड़े भाई-बहिन या दोस्त पशुपालन जैसा व्यवसाय शुरू करना चाह रहे हों, तो वो इससे फायदा उठा सकते हैं। इससे उन्हें पालतू पशुओं को रखने में ज़रूरी खर्च और दिक़्क़तों का भी पता चल जाएगा और उनसे होने वाली आमदनी का भी एक मोटा अंदाज़ हो जाएगा। तो हुआ न कुछ काम! ❑❑❑


**फार्म 4 (नियम 8 देखिए)**

**मासिक चकमक बाल विज्ञान पत्रिका के स्वामित्व और अन्य तथ्यों के सम्बंध में विवरण**

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रकाशन का स्थान | भोपाल | सम्पादक का नाम | विनोद रायना |
| प्रकाशन की अवधि | मासिक | राष्ट्रीयता | भारतीय |
| प्रकाशक का नाम | विनोद रायना | पता | एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल - 462016 |
| राष्ट्रीयता | भारतीय | | |
| पता | एकलव्य, ई-1/ 25, अरेरा कालोनी, भोपाल - 462016 | | |
| मुद्रक का नाम | विनोद रायना | उन व्यक्तियों के नाम और पते जिनका इस पत्रिका पर स्वामित्व है | रेक्स डी रोज़ारियो एकलव्य ई-1/25 अरेरा कालोनी भोपाल - 462016 |
| राष्ट्रीयता | भारतीय | | |
| पता | एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल - 462016 | | |

मैं विनोद रायना, यह घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

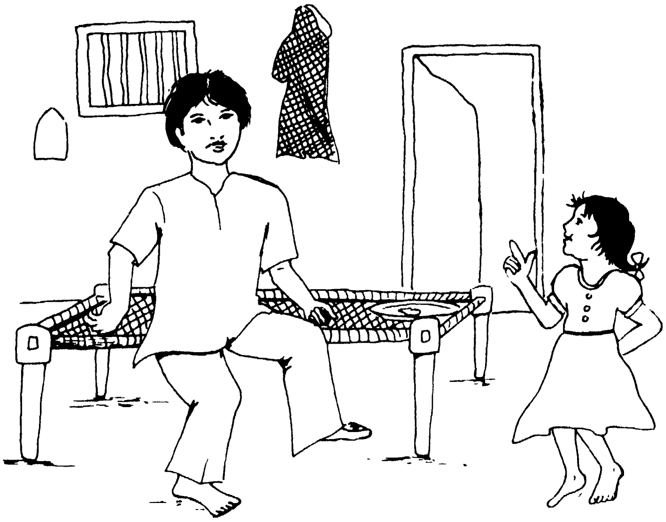
**विनोद रायना**

**(प्रकाशक के हस्ताक्षर)**

*कहानी*

# अपराजिता

□ गिरिजा कुलश्रेष्ठ



**वह** लड़की, जो अक्सर आँगन में कंकड़ उछाल-उछालकर खेलती रहती है या यूँ ही उछलती-फुदकती रहती है, चाहे इसके लिए उसे बार-बार रोका जाए, सबके लिए एक चुनौती बन गई है। यहाँ तक कि मेरे लिए भी।

उसका नाम कंकू यानी कुंकुम है। कुछ दिन पहले ही नानी के घर से आई है। दो ही भाई-बहिन हैं। भैया छोटा है और माँ को ज़्यादा प्यारा भी। पर जब कंकू का मन होता है भाई को 'खोह' देकर खुद कब्ज़ा कर लेती है माँ की गोद पर। चाहे भाई रोता रहे या माँ धकेलती रहे।

"आख़िर दिन भर यही तो घुसा रहता है माँ की गोद में। मैं तो ज़रा सी देर के लिए ही तो बैठती हूँ।"

माँ काफी मिन्नतें करके ही कंकू को गोद से उतार पाती है। दूध भाई के लिए ही आता है पर आधे से ज़्यादा जाता है कंकू के पेट में। "जब मुन्ना दूध पी सकता है तो मैं क्यों नहीं पी सकती?" माँ के मना करने पर कंकू तर्क देती है, "दूध मुझे भी तो अच्छा लगता है।" उसके तर्कों का माँ के पास जवाब नहीं है।

साँवली, दुबली-पतली सी कंकू बहुत चंचल है। ज़्यादा सुन्दर तो नहीं पर आँखों में विशेष चमक है। नाक हर समय बहती रहती है जिसमें कंकू का कोई दोष नहीं। "नाक है कि परनाला", माँ अक्सर नाक पोंछते समय खीज उठती है, "लड़की क्या है, मुसीबत है।" यह कहने के साथ कपड़े से ज़ोर से रगड़ भी देती है मानो वह नाक को ही उखाड़कर सारा झगड़ा ख़त्म कर देना चाहती हो। पर कंकू खिलखिलाती है.......... खूब ज़ोर की हँसी ....... माँ कुढ़कर चुप हो जाती है।

कंकू से जान-पहचान करने की पहल किसी को नहीं करनी पड़ती। यह काम वह खुद बखूबी कर लेती है। और दीदी, मौसी, नानी, मामा, भैया, चाचा,......... जो भी सम्बोधन उचित समझती है खुद ही फिट कर लेती है। 'कंकू क्या बला है' मैं नहीं जानता था। एक दिन बड़ी लय के साथ उसने पुकारा, "राजूऽऽऽ भैयाऽऽऽ..! क्या कर रहे हो?" मैंने चौंककर देखा। 'कमाल है! न जान न पहचान, बड़े मियाँ सलाम!' पर इतने प्यार से पुकारने पर मुस्कराकर हाथ तो हिलाना ही था। बस, उसे तो जैसे सिग्नल मिल गया। फौरन मेरे पास आ धमकी और बातें करने लगी। अब जब चाहे वह मेरे कमरे में आ जाती है और मेरी हर बात का बारीकी से निरीक्षण करती है, "राजू भैया! कमरे में अकेले क्या कर रहे हो?....क्या खा रहे हो भैया! खा कैसे नहीं रहे, अभी मुँह तो चल रहा था।...वहाँ धूप में

मत बैठो। मेरी मम्मी कहती है धूप में रंग काला पड़ जाता है...यह नहीं, आप पर तो वो चैक वाली शर्ट अच्छी लगती है।"

मैं बौखलाकर उस बित्ते भर की लड़की को देखता हूँ जो बेझिझक मेरे 'बड़ेपन' पर हमला करती है। ज़रा-सी लड़की पर बात मेरी नानी जैसी। "कम बोला कर", मैं उसे डाँटता हूँ, "लड़कियों का ज़्यादा बकबक करना अच्छा नहीं लगता।"

वह मेरी झिड़की पर हँसती है, मानो मैंने कोई चुटकुला सुनाया हो। वह फ़ौरन बात बदल देती है, "राजू भैया! जो दीवार पर टँगी है, वो पतंग तुमने बनाई है? कितनी अच्छी है। क्या मेरे लिए बना दोगे?"

"तेरे लिए?" मैंने आश्चर्य से उसे देखा, "तू क्या करेगी पतंग का?"

"उड़ाऊँगी", वह बड़े विश्वास से कहती है।

"तू पतंग उड़ाएगी? लड़की होकर?"

मेरे प्रश्न के उत्तर में वह हँसी, मानो मैंने बहुत ही बचकानी बात कह दी हो। बोली, "राजू भैया तुम भी तो पतंग उड़ाते हो। डौलू उड़ाता है। फिर मैं क्यों नहीं उड़ा सकती? ज़रूर उड़ा सकती हूँ। है ना?"

"अच्छा, अब तू जा.... मेरा दिमाग़ मत *चाट*....और सुन, मेरे सामने ज़्यादा बोला मत कर। चल भाग यहाँ से।" मैं झिड़क देता हूँ। वह फिर भी हँसती हुई जाती है पर थोड़ी देर बाद फिर आ धमकती है। कभी मेरा पेन उठाती है तो कभी किताबें उलटती है।

"तू पढ़ती-लिखती तो है नहीं।" मेरा ख्याल था कि पढ़ाई के नाम पर यह ज़रूर कमज़ोर पड़ेगी। उसकी माँ पढ़ाई के नाम पर खूब सुनाती है, "नाम डुबोएगी हमारा। पढ़ाई-लिखाई में तो मन ही नहीं लगता... बातें बनवा लो बस....पाँच साल की हो चुकी पर अक्षर ज्ञान भी नहीं है...।"

"मैं बड़ी हो जाऊँगी, तब पढ़ूँगी खूब....," मेरी बात से वह ज़रा भी नहीं झेंपती। "मेरे बाबा कहते हैं, अभी तू बहुत छोटी है।"

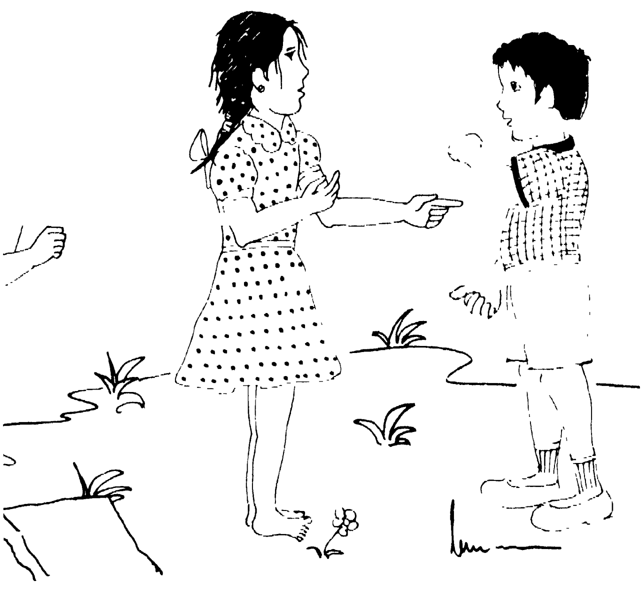


"तू छोटी है? कौन कहता है?....बड़ों-बड़ों के तो कान काटती है...चालाक लोमड़ी,"...मेरे मन में उसकी अडिगता से खीज उत्पन्न होती है।

वह खूब हँसती है....खुली और निश्छल हँसी। मेरा तनाव जाने कहाँ विलीन हो जाता है।

लेकिन कंकू केवल हँसकर ही परास्त नहीं करती। बल्कि जहाँ हँसी से काम नहीं चलता, रोकर चला लेती है। रोना भी ऐसा कि कानों को पार कर जाए। चेहरा लाल हो जाता है, आँखें निकली जाती हैं। यह बात अलग है कि आँसू नाममात्र को ही आते हैं। उसकी माँ वैसे उसके सामने हमेशा प्रशंसा ही करती है। शायद रोने के डर से ही। पर एक दिन जाने कैसे निकल गया, "इस लड़की से तो डौलू ही अच्छा है। बहुत तंग करती है।" बस उसने रो-रोकर ऐसी आफत खड़ी की कि माँ को हार माननी पड़ी, "कहाँ के डौलू-वौलू? हमारी कुंकुम से तो कोई भी अच्छा नहीं है।" बस, सुनकर वह फ्रॉक झाड़कर फिर तैयार।

जब से वह आई है मकान के सभी बच्चों में उसके विरुद्ध संगठन हो गया है। अपने पास खड़ी भी नहीं होने देता कोई। पर उसे किसी की परवाह नहीं है। वह अकेली बैठी ज़ोर-ज़ोर से कविता गाती है - 'तितली उड़ी....



"यह तो हमारी कविता है", संजू व डौलू भड़क उठते हैं। "इसने हमारी कविता चुराई है।"

"किसी की कविता नहीं चुराई। कहीं से सुनी थी हमने तो। एक लड़के ने सुनाई थी।" कंकू भी अकड़कर कहती है।

"किस लड़के से? बता किसने सुनाई थी...मज़ा चखाएँगे उसे।" संजू पूछता है।

"हाँ ज़रूर मज़ा चखाओ", कंकू मुस्कराती है, "वह लड़का नीली नेकर व धारियों वाली शर्ट पहने है....उसका एक दाँत टूटा है...वह..."

"तू मेरा नाम लेती है," डौलू गुर्राकर कहता है। "भला मैं तुझे कविता सुनाऊँगा?...तुझे?....अच्छा! हमारी कविता सीखने की ज़रूरत नहीं।"

"ज़ोर से गाओगे तो हम खूब सीखेंगे। अगर इतना ही डर है तो कमरे में धीरे-से गा लिया करो", कंकू हँसती है। अब डौलू जब भी नई कविता सीखकर आता है मन ही मन याद करके कमरे में ही गा लेता है।

वैसे भी हमारे डौलू जी की हालत आजकल खस्ता है। क्योंकि उन्हें मेरा और माँ का हर काम दौड़-दौड़ के करना पड़ता है। वरना ज़रा भी सुस्त पड़े कि कंकू 'जिन' की तरह फौरन हाज़िर और फुर्ती से कर देती है काम। साथ ही कहना भी नहीं भूलती - "राजू भैया का काम हमने कर दिया।" डौलू जी खिसियाए कंकू की नोच-खँसोट कर डालते हैं पर वह हँसती हुई वही बात दोहराती रहती है। इसलिए कंकू को कोई अवसर नहीं देना चाहते डौलू जी।

इसी तरह किसी न किसी बात पर सभी बच्चे कुढ़े हुए हैं कंकू से। सब किसी न किसी तरह उसे चिढ़ाने के प्रयास करते हैं।

"एक लड़की  ज़िद्दी, गन्दी....नाक कितनी छोटी है।"

"उसके दो ही काम हैं - रोना और खाना।" "तीसरा काम ...दूसरों की कविता चुराना, दूसरों के पीछे मंडराना...देखा! फ्रॉक सिर्फ एक ही है उसके पास....वह भी पुरानी...."

"मेरे पापा रक्षाबन्धन पर लाए थे", कंकू गर्व से कहती है। उसे विश्वास हो जाता है कि उसी की बातें हो रही हैं। फिर वह चुप क्यों रहे? "जब यह फ्रॉक नई थी न, बहुत अच्छी लगती थी। अब भी मेरी नानी कहती है कि तू इसमें बहुत सुन्दर लगती है-..."

"सुन्दर? यह लड़की?.....हो-हो-हो...", लड़के ताली बजाकर हँसते हैं।

"हो...हो...हो...." कंकू उनसे तेज़ ठहाका लगाती है।

मैं यह सब देखकर हैरान होता हूँ। कहीं यह लड़की मन्दबुद्धि तो नहीं? पर मन्दबुद्धि कैसे हो सकती है? वह दूर से ही सूँघकर बता देती है कि कमरे में मैंने आम छुपा रखे हैं या केले। संजू पाठ्य पुस्तक पढ़ रहा है या उसमें छुपाकर कामिक्स। मैं कुछ भी नाम लेता रहूँ पर पीने का ढंग देखकर कह देती है कि मेरे गिलास में कड़वी दवा नहीं...मीठा शर्बत है। इसे मन्दबुद्धि बिल्कुल नहीं कहा जा सकता। इसका प्रमाण मुझे एक दिन और मिला, "मेरे पापा आएँगे तब बहुत सारे आम लाएँगे। मुझे आम बहुत अच्छे लगते हैं", उसने मेरे आसपास मंडराते हुए कहा।



"मैंने भी तो तुझे दो आम दिए थे", मैंने उसे यह बात याद दिलाई। और पहले भी माँ उसे देती रहती है। यह *छोटापन था*, फिर भी मैंने उसे जताना चाहा। शायद इसी तरह वह मेरे सामने 'छोटी' बने।

"मेरे पापा बहुत सारे लाएँगे", उसने मेरी बात बिल्कुल अनसुनी कर दी।

मैंने जान-बूझकर उसी बात पर ज़ोर दिया, "क्यों कंकू! हमने जो आम खिलाए वो कुछ नहीं?"

"जब पापा लेके आएँगे तब मैं तुम्हें दे जाऊँगी", उसने सगर्व कहा।

मैं अवाक् उसे देखता रह गया। यह लड़की बुद्धू कैसे हो सकती है?

कहा जा चुका है कि कंकू के विरुद्ध सभी बच्चों में संगठन है। संजू महाशय एक कार ले आए। जब ज़मीन पर रगड़कर चलाते तो विशेष ध्वनि के साथ उसमें लाइट भी जलती। सब बच्चे इकट्ठे होकर रोज़ उससे खेलें और कंकू को सुनाते हुए बढ़ा-चढ़ाकर बातें करें।

"अब ज़रूर यह लड़की हमारे आसपास चक्कर काटेगी। तब कितना मज़ा आएगा", सबने सोचा।

"मेरे पास तुम सबसे अच्छी चीज़ है", कंकू ने भी उन्हें सुनाया। "तुम अपनी कार में बैठ नहीं सकते पर मैं बैठ भी सकती हूँ और उसे चला भी सकती हूँ।"

"हाँऽऽऽ!" सबने विस्मय से उसकी ओर देखा। एक मुड़े तार पर लकड़ी का छोटा-सा तख्ता रख, उस पर वह बैठी थी। तार घुमाने से तख्ता तेज़ी से सरक रहा था। वह हँस रही थी।

"यह भी कोई खिलौना है?" संजू ने उपेक्षा से कहा, "बाज़ार से तो नहीं खरीदा गया ना।"

लेकिन मैंने देखा दूसरे दिन सब बच्चों के हाथ में वैसा ही मुड़ा तार था। वे सपाट पत्थर या तख्ती तलाश रहे थे।

मैं हैरान था। यह लड़की कहीं भी कमज़ोर नहीं पड़ती। कितनी अडिग है। जब मैं उसे अनार से 'अ' बताता हूँ तो वह अनार के पेड़, फूल, फल की बातें करती है। यहाँ तक कि उसे अनार कैसा लगता है, उसके घर अनार कब आया...आदि...।

मैं चाहता हूँ यह 'छोटी' लड़की मेरे सामने 'छोटी' बने। कमज़ोर पड़े ताकि वह मेरी हमदर्दी स्वीकार करे। कभी ऐसा अवसर आए जब मेरे सामने इसका 'बड़ापन' न रहे। एक दिन वह अवसर आया भी। हुआ यह कि किसी बात पर उसकी माँ ने उसे खूब पीटा। पिटाई भी ऐसी कि हर तमाचे पर लड़की गिर पड़े। मुझे दुख हुआ। उसे बचाने भी गया पर उसकी माँ ने मुझे रोक दिया।

"यह लड़की बिगड़ रही....जब चाहे जिस चीज़ के लिए अड़ जाती है...बिना मार के सीधी न होगी।"

मेरी आँखों में दिन भर रोती हुई कंकू की तस्वीर घूमती रही। शाम को वह मेरे पास आई। आँखें सूजी व लाल थीं पर वह वैसे ही मुस्कराई। मुझे उस पर बड़ा प्यार व तरस आया।

"कंकू ऐसी क्या ज़िद की तूने कि इतनी मार पड़ी?" मैंने उसके बालों को सहलाकर पूछा।

"राजू भैया", उसने मेरी बात को अनसुनी करके कहा, "अब मैं रस्सी कूद लेती हूँ... तुम गिनोगे?"

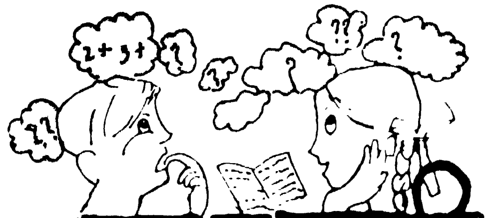
"उफ्", मैं आहत-सा हो गया। फिर भी मैं उसके मुँह से उसके मन की बात सुनना चाहता था। "जो भी हो कंकू माँ तुझे बहुत बुरी तरह मारती है, है न?"

"मेरी माँ प्यार भी तो बहुत करती है।" उसने मेरी बात काटकर कहा। "अब देखो मैं बिना रुके कितनी बार रस्सी कूद सकती हूँ ...गिनना।"

वह मेरे सामने रस्सी कूदने लगी। मैं हैरान, पराजित-सा, अवाक् उसे देखने लगा। ❑❑

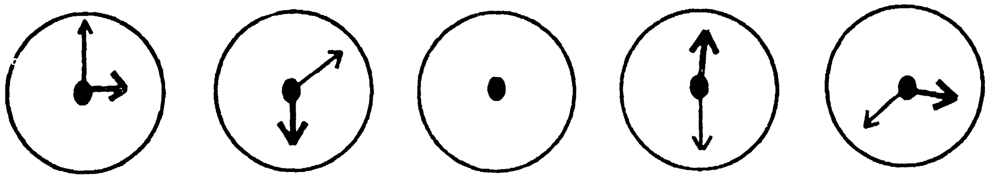
सभी चित्र : सुशील लांडगे





# माथापच्ची

(1)

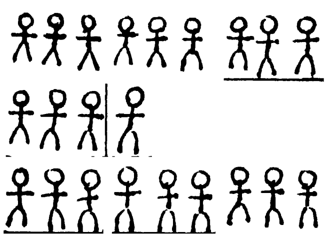


**इन** घड़ियों में काँटों की स्थिति में एक निश्चित समय का फासला है। कितना फासला है बताओ तो! और बीच की घडी के तो काँटे भी गिर गए हैं। समय के फासले के मुताबिक तुम ही लगा दो।

(2)

**अलादीन** की पाँचवीं की अर्धवार्षिक परीक्षाएँ चल रही थीं। गणित के पेपर के दिन गुरुजी ने कक्षा में आकर बताया कि अगले दिन की परीक्षा तीन दिन के लिए स्थगित कर दी गई है। अगर कल के बाद वाला दिन (अगले का अगला दिन) रविवार हो तो परीक्षा किस दिन होगी?

(3)



**इस** इमारत के बीच के कमरे में एक बहुत पुरानी और अनमोल मूर्ति रखी हुई है। आजू बाजू के आठों कमरों में 25 चौकीदार तैनात किए गए हैं मूर्ति की चौकसी के लिए। चौकीदारों ने कुछ इस तरह व्यवस्था की है कि-

मुखिया खुद बीच के कमरे में मूर्ति के पास होगा। बाक़ी हरेक कमरे में 3-3 लोग रहेंगे।

चौकीदारों को एक-दूसरे के कमरों में जाने की अनुमति है। पर शर्त यह है कि इमारत की चारों दिशाओं के कमरों की पंक्ति में हमेशा 9-9 चौकीदार मौजूद हों।

एक दिन मुखिया को बताए बिना 4 चौकीदार घूमने चले गए। पर बाकी चौकीदारों ने ऐसी व्यवस्था बनाई कि हर पंक्ति में 9 चौकीदार ही मौजूद दिखें।

दूसरे दिन, घूमने गए 4 चौकीदार अपने 4 और दोस्तों के साथ वापिस लौटे। पर वो भी ऐसे बँट गए कि हर पंक्ति में 9 चौकीदार ही नज़र आएँ।

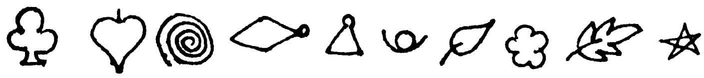
तीसरी रात चौकीदारों के 4 दोस्त और आ धमके यानी अब 24 चौकीदार और 8 दोस्त मिलाकर कुल 32 लोग हो गए। फिर भी उन्होंने व्यवस्था बनाए रखी।

चौथी रात दोस्तों की संख्या कुल 12 हो गई। पर चौकीदारों को फिर भी कोई परेशानी नहीं आई।

पाँचवे दिन 12 दोस्तों के साथ 6 चौकीदार भी खिसक लिए। अब 18 चौकीदारों ने पहले जैसी व्यवस्था कायम रखी।

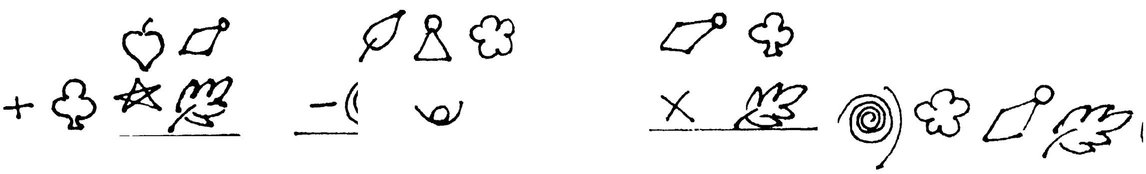
बताओ चौकीदारों ने पाँचों दिन किस तरह की होगी व्यवस्था?

## (4)

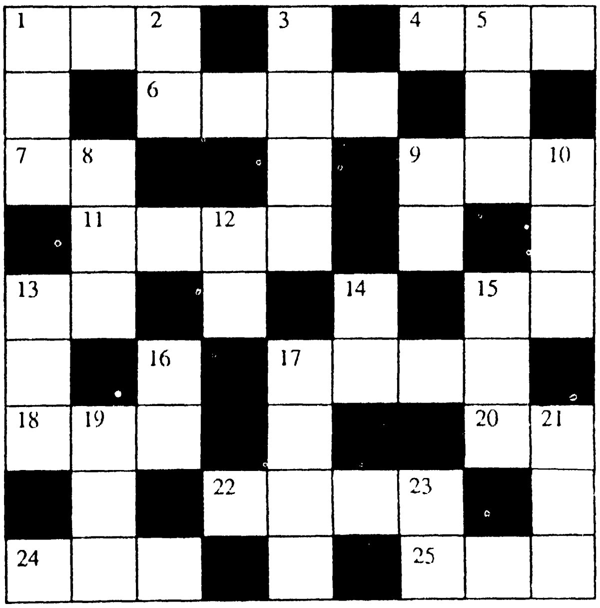


1 2 3 4 5 6 7 8 9 0

यहाँ एक तरह की कोड भाषा के संकेत दिए गए हैं। इनकी मदद से क्या तुम नीचे दिए सवालों को हल कर सकते हो?



# वर्ग पहेली - 42





### संकेत: बाएँ से दाएँ

1. 'जतन करने' पर यह धातु मिलेगी (3)
4 कब सहर होगी में नसीहत है (3)
6. नाराज़ न हो, भेंट ले लो (4)
7. शक को पलटो (2)
9. मैना, बया, कस्तूरा की पूँछ में दोस्ती (3)
11. किसान (4)
13. दर्शन (2)
15. पक्षी भी, वंचित भी (2)
17. नग में जान डालो, हाथी-सी सूरत बनेगी (4)
18. प्रतिद्वन्दी (3)
20. गाना (2)
22. भारत का वह प्रदेश जहाँ रेगिस्तान के जहाज़ पाए जाते हैं (4)
24. थका हुआ (3)
25 पानी (3)

### संकेत : ऊपर से नीचे

1. करम की उलट-पलट मे लहर है (3)
2 काया (2)
3. शक्कर और पारा की जोड़ तोड मे उपनाम (4)
5 सब दरार में मेघ ढूँढो (3)
8 शहर की हद मे मिठास है (3)
9 कोयल (2)
10 जरा नाम की पूँछ हटे तो गुस्सा हो (3)
12 परोरी (2)
13. सोने की मुहर (3)
14. खाने की चीज़ है, खा लो (2)
15. नमूना (3)
16 बस पलटो (2)
17. आजकल 'जग मे नार' की आवाज़ तेज़ है (4)
19 तम और तकी की जोड-तोड़ मे दाम (3)
21. अनगिनत माल मे एक छायादार पेड़ (3)
23 शिरा (2)

**नीरज पोरवाल, किशनगंज, बांरा (राजस्थान) द्वारा भेजी गई वर्ग पहेली पर आधारित**

**● सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक तीन- माह तक उपहार में भेजी जाएगी। हल के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से काटकर न भेजें। बल्कि उसमें जो शब्द आने वाले हों उन्हें संकेत के ही नम्बर देकर लिख दें। वर्ग पहेली- 42 का हल अप्रैल, 95 अंक में देखें।**

# क़िस्सा आफ़न्ती का

चित्र : शिवेन्द्र पांडिया




अरे मियाँ पैसे तो देते जाओ!
अभी तो दिए हैं!
अभी कब!??
होटल गरीब नवाज़
झूठ बोलता है! चल बादशाह के पास!
क्यों आफ़न्ती! तुमने खाना खाया तो पैसे क्यों नहीं दिए?
जहाँपनाह, आपने मेरे खरबूजों के बदले जो तीन 'बहुत अच्छा' मुझे दिए थे, वो मैंने इसे दे दिए हैं, लेकिन फिर भी यह पैसे माँग रहा है!

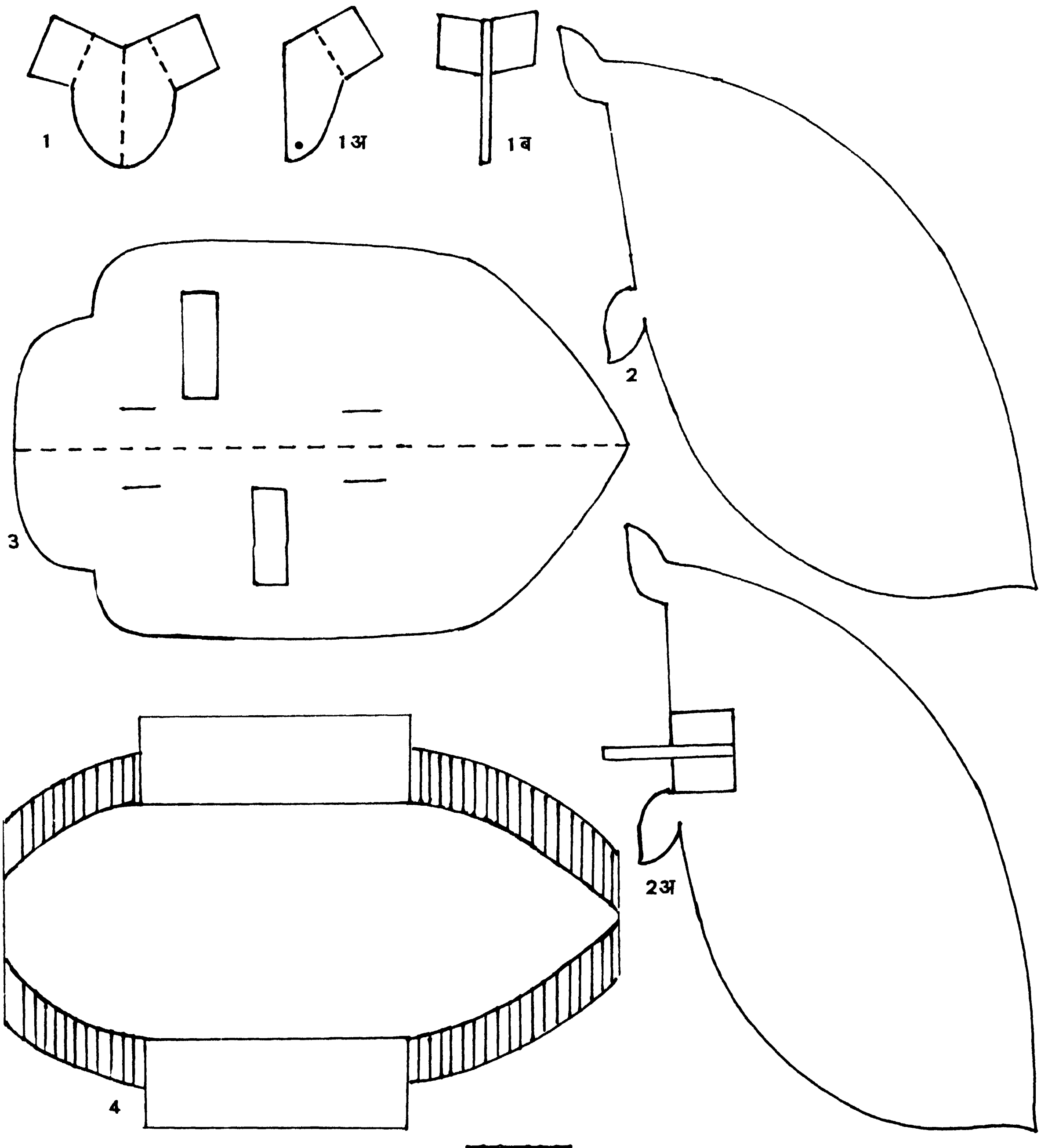
*तुम भी बनाओ*

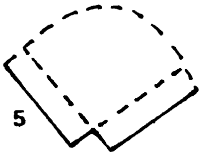
# तितली

**ब**चपन में रंगबिरंगी तितली को पकड़ने के लिए तुम उसके पीछे ज़रूर भागे होगे, है ना। वो लगती ही है कितनी सुन्दर। चलो इस बार अपन पंख फड़फड़ाने वाली तितली ही बनाते हैं। इसे तुम मनचाहे तरीक़े से सजा भी सकते हो। बस अब झटपट ज़रूरी सामान समेट लाओ।

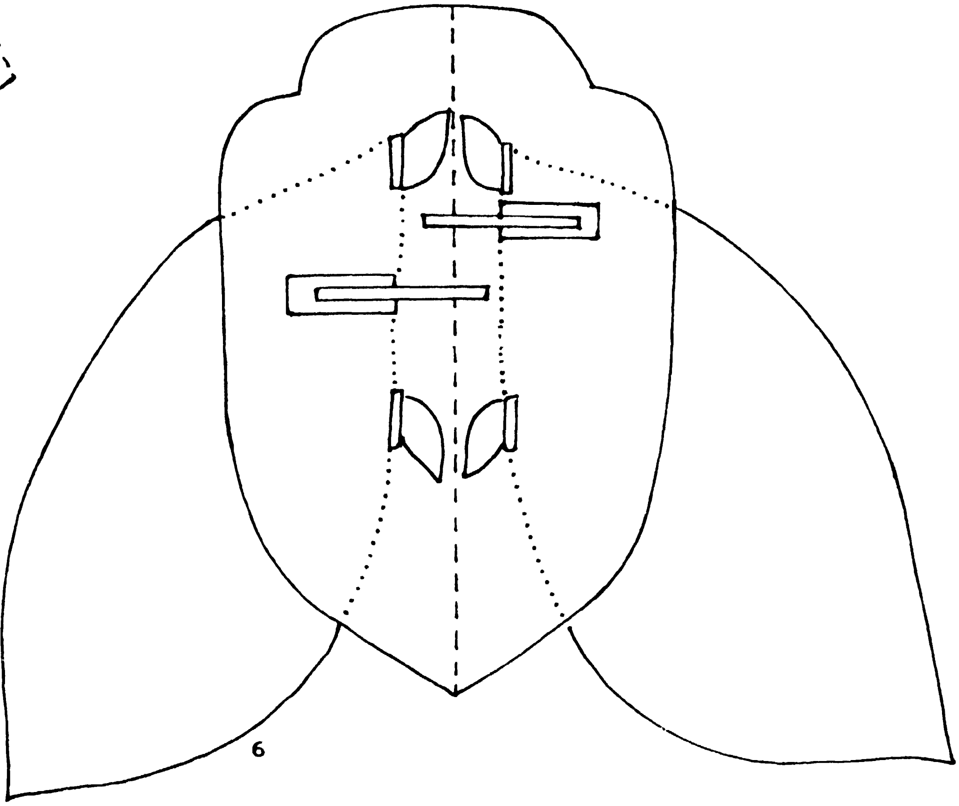
शादी के कार्ड या पोस्टकार्ड जैसा मोटा कागज़, पेंसिल, ब्लेड, कैंची, सूई, धागा, गाढ़ी लेई या रबर सोल्यूशन।

तितली बनाने के लिए सबसे पहले यहाँ चित्र 1 से 5 तक की सभी आकृतियों को बिलकुल इसी नाप और आकार में कागज पर निशान लगाकर





5



6

काट लो। आगे बढ़ने से पहले इन आकृतियों से मिलते चलें-

**चित्र 1**- पंख फड़फड़ाने में सहायक पाँव

**चित्र 2**- पंख

**चित्र 2 अ**- पाँव लगा पंख

**चित्र 3**- शरीर का ऊपरी हिस्सा

**चित्र 4**- शरीर का निचला हिस्सा।

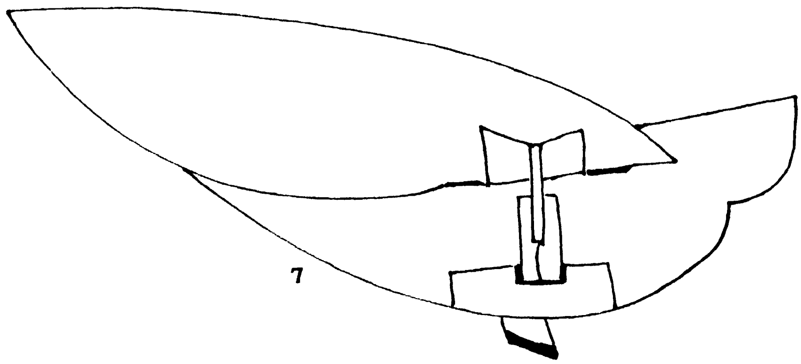
**चित्र 5**- तितली का मुँह

तितली के दो पंख और दो पाँव होते हैं इसलिए आकृति 1 और आकृति 2 दो-दो बनानी होंगी। पाँव को पंख पर लगाने से पहले कुछ मशक्कत करनी होगी। आकृति 1 को बीच की टूटी रेखा पर से मोड़ना है। इससे आकृति **1-अ** मिलेगी। अब **1-अ** में दिख रही टूटी रेखा पर से दोनों हिस्सों को विपरीत दिशा में मोड़कर पाँव बना लो। और काले बिन्दु की जगह पर छेद कर धागा बाँध लो, इस तरह कि धागे का एक सिरा लटकता रहे। पाँव के नीचे के हिस्से को गोंद से चिपका दो। ऊपर की तरफ से देखने पर यह आकृति **1-ब** की तरह दिखेगी।

पाँव को पंख पर लगाने में चित्र **2-अ** तुम्हारी सहायता करेगा। विपरीत दिशा में मुड़े हुए हिस्से की सतह पर लेई लगाकर एक पाँव को एक पंख के निचले कुण्डे के पास और दूसरे को दूसरे पंख के दोनों कुण्डों के बीच में चिपकाना है। इन दोनों को आमने-सामने इसलिए नहीं चिपकाते हैं ताकि पंख के शरीर पर लगने के बाद दोनों पाँव आपस में न टकराएँ। तितली के पंख तो हो गए तैयार।

अब बनाते हैं तितली का शरीर।

इसके लिए **चित्र 3** में दिख रही चार आड़ी रेखाओं पर ब्लेड से सफाई से कट लगा लो और जो आयत दिख रहे हैं उन्हें काटकर निकाल दो। इसके बाद **आकृति 3** को बीच की टूटी रेखा पर से मोड़ लो। मुड़ने पर सामने का हिस्सा (Λ) आकार या नाव की तरह खुला रहेगा। पंख को शरीर पर लगाने के लिए इसके कुण्डों को शरीर के एक तरफ बने दो खड़े कट में फँसाना है (देखो **चित्र 6**)। इससे पंख पर लगे पाँव आकृति **3** के आयत के अन्दर चले जाएँगे। ध्यान रहे कि हाथ से पंख को ऊपर उठा कर छोड़ने पर पाँव आसानी से



7

बिना किसी अड़चन के इस छेद में आ जा सकें। कोई दिक्कत आने पर छेद को काटकर बड़ा भी किया जा सकता है। यही सब काम शरीर के दूसरी तरफ दूसरा पंख लगाने में भी करना है।

तितली का शरीर बनाने के लिए **चित्र 4** को **चित्र 3** पर चिपकाना होगा। इसके लिए **चित्र 4** की खड़ी रेखाओं पर कैंची से कट लगा दो। ये आड़ी पट्टियाँ और आमने-सामने के दो आयत आकृति 4 को आकृति 3 से चिपकाने में सहायक होंगे। आकृति 4 की अन्दर वाली लाइन पर से कटी हुई पट्टियों और दोनों आयतों को अन्दर की तरफ मोड़ो। मोड़ने पर कटी हुई पट्टियाँ और दोनों आयत खड़े हो जाएँगे। अब आकृति 3 को हल्के से दबाकर आकृति 4 के ऊपर इस तरह रखो कि दोनों हिस्सों के किनारे और पीछे की चोंच एक दूसरे को छुएं। चोंच मिलाने के लिए तुम्हें आकृति 4 के पिछले हिस्से को ऊपर की तरफ घुमाना होगा। इससे निचला हिस्सा अर्धगोलाकार-सा लगेगा। अब पट्टियों के बाहर की तरफ और आयत के अन्दर की तरफ लेई लगा लो। पट्टियों को शरीर के ऊपरी हिस्से के अन्दर की तरफ और आयत को बाहर की तरफ चिपका दो- पहले दोनों आयत, फिर मुँह की तरफ वाली पट्टियाँ और सबसे अंत में पीछे के हिस्से की पट्टियाँ। इनको दबाकर पकड़े रहो, जब तक ये चिपक न जाएँ।

अब ज़रा पंख फड़फड़ाने का इंतज़ाम किया जाए। यह थोड़ा टेढ़ा मामला है सो ध्यान से करना होगा। इसके लिए पाँव के निचली तरफ लटकते धागे को सूई में पिरोकर इसे पाँव वाले छेद से शरीर के अन्दर से होते हुए **आकृति 4** में छेद कर नीचे से बाहर निकालना है। यह छेद शरीर के निचले हिस्से के किनारे के पास हो। यही सब दूसरी तरफ (यानि दूसरे पाँव में) भी करो। इस बाहर निकले धागे को खींचने पर धागा तन जाएगा और पंख कुछ ऊपर उठ जाएगा। धागे को छोड़ने पर पाँव शरीर के अन्दर चला जाएगा और पंख नीचे आ जाएगा। अगर ऐसा नहीं हुआ तो जान लो कहीं कुछ गड़बड़ है। उसे ढूँढो। ठीक करो। और जब पंख फड़फड़ाने लगे, तो आगे बढ़ो।

तितली के निचले शरीर से निकले दोनों धागों को कुछ ढील छोड़कर गाँठ लगाकर जोड़ लो। लगभग 1.5 - 2 से.मी. चौड़ी कागज़ की एक पट्टी लो। इस पर गोंद लगाकर इसे धागों के गाँठ वाले हिस्से पर चिपकाते हुए लपेट लो। धागे खींचने के हैंडल का काम देगा यह। इस हैंडल को बार-बार खींचने और छोड़ने पर दोनों पंख फड़फड़ाएँगे। अगर ऐसा है तो समझो पंख तो ठीक ठाक लग गए हैं।

लो भई, तितली तो बन गई। बस मुँह (आकृति 5) रह गया। यह तितली के सामने की तरफ **आकृति 3** के नीचे लगेगा। **आकृति 5** को टूटी रेखा पर से मोड़कर मुड़ी हुई जगह पर बाहर की तरफ लेई लगाकर **आकृति 3** के सामने चोंच के नीचे चिपका दो।

अब रंगीन कागज़ या रंग उठाओ और बना दो इसे रंग-बिरंगा। नीचे लटकता धागा खींचो-छोड़ो और — पहुँच जाओ फूलों के बीच।

**❑ हिमांशु बिस्वास ❑ प्रस्तुति- शशि**

# मनुष्य महाबली कैसे बना!

## *नए में पुराना*

**इस** शताब्दी के आरम्भ में महान अक्टूबर समाजवादी क्रांति के पहले रूस में ऐसी जगहें थीं, जहाँ प्रत्येक शरद में जब फसल काट ली जाती थी, तो स्त्रियाँ ''कटाई'' का उत्सव मनाया करती थीं।

वे आख़िरी पूला लेतीं और उसके ऊपरी सिरे पर रूमाल बाँध देतीं और उसे साया पहना देतीं। इसके बाद वे एक-दूसरे के हाथ पकड़कर उसके गिर्द घेरा बना लेतीं और गातीं :

*आज हुई है कटाई*
*हमारे खेतों की,*
*जय हो, जय हो, जय हो!*
*एक की हुई है कटाई,*
*और एक की हुई बुआई,*
*जय हो, जय हो, जय हो।*

प्रार्थना के इस गीत की अजीब और नीरस आवाज़ उन मस्ती भरे गीतों से ज़रा भी मेल नहीं खाती थी, जिन्हें गाँव के नौजवान लड़के और लड़कियाँ शाम को टहलते समय गाते थे।

''कटाई'' एक पुराना संस्कार था, जो युगों-युगों से सबसे पहले किसानों के समय से चला आ रहा था। ऐसे कितने ही संस्कार खेलों और गीतों के रूप में हम तक आ गए हैं।

बच्चे हाथ में हाथ जोड़कर गाते हैं :

*अरे, हमने बोया था बाजरा,*
*हाँ, बाजरा, भई बाजरा।*
*अरे, हमने बोया था बाजरा,*
*हाँ, बाजरा, भई बाजरा।*

खेल का यह गीत भी प्राचीन काल में एक संस्कार ही था। हज़ारों वर्षों की अवधि में इसमें जादू का जो अंश था, वह बिलकुल ही लुप्त हो गया। बस तमाशा ही बाक़ी रह गया।

कितने ही प्राचीन संस्कार आज भी बच्चों के खेलों और गीतों में ज़िंदा रहते चले आ रहे हैं :

*बरखा, बरखा, अब तुम जाओ!*
*बरखा, बरखा ज़ोर-ज़ोर से आओ!*

बच्चे जब यह गीत गाते हैं, तो न वर्षा को बुलाने के लिए, न बादलों को छितराने के लिए। वे भलीभाँति जानते हैं कि शब्दों का वर्षा पर कोई प्रभाव न पड़ेगा। वे यह गीत बस इसलिए गाते हैं कि यह खेल है।

और बड़ों को भी ऐसे गीत गाने और खेल खेलने पर कोई आपत्ति नहीं, जिनका किसी ज़माने में मतलब ही अलग था।



इस प्रकार हँसी-खुशी भरे खेलों के ज़रिये प्राचीन विश्वास और जादू-टोने के संस्कार हम तक चले आए हैं।

लेकिन, उन्हें खेलों के अलावा भी बरक़रार रखा गया है।

गिरजाघरों में जब ईस्टर मनाया जाता है, तो प्रार्थना के शब्दों में हमें प्राचीन जादू-टोने के गीतों का प्रतिबिंब मिलता है।

प्रागैतिहासिक खेतिहरों के ही गीतों की तरह इन प्रार्थनाओं में भी मृत्यु और पुनर्जीवन की बात की जाती है।

पुराने ज़माने से हम तक कितने ही अंधविश्वास और पूर्वाग्रह चले आए हैं। हमारे ज़माने में भी ऐसे लोग हैं, जो अभी तक इस बात पर विश्वास करते हैं कि अगर उन्हें घोड़े की नाल मिल जाए, तो यह उनके लिए शुभ रहेगा, और अगर अपने बाएँ कंधे पर उन्हें दूज का चाँद दिख जाए, तो यह अशुभ रहेगा। इस तरह अंधविश्वास सदियों जीते रहते हैं।

### *अद्‌भुत भण्डारघर*

**औरतें** जब ज़मीन को अपनी कुदालों से खोदने में लगी होतीं, तो मर्द खाली न बैठे रहते। वे अपने दिन शिकार में बिताते और देर गए साँझ को अपने विजय चिन्हों के साथ लौटते।

अपने पिता और बड़े भाइयों को लौटते देखकर बच्चे यह मालूम करने के लिए कि शिकार सफल रहा या नहीं, लपककर उनके पास जाते। जंगली सूअर के खून में सने सिर की तरफ जिसके मुँह से दो मुड़े हुए दाँत बाहर निकले हुए थे, या बारहसिंघे के शाखाओं वाले सींगों की तरफ वे बड़े कुतूहल के साथ देखते। लेकिन उन्हें सबसे ज्यादा खुशी तब होती, जब शिकारी जिंदा जानवरों को लेकर वापस आते - नन्हें-नन्हें, दीन भेड़ों के मेमने या असहाय और बिना सींगों के बछड़े-बछियाएँ।

शिकारी अपने चौपाये क़ैदियों को तुरंत ही नहीं मार डालते थे। उन्हें एक बाड़े में रखा जाता था और खिलाया-पिलाया जाता था कि वे बढ़ते रहें। घर के पास बछड़े रम्भाते और मेमने मिमियाते रहते, तो शिकारी अधिक निश्चिंत रहते थे। वे जानते थे कि अगर अगले शिकार से वे खाली हाथ भी लौटे, तो उन्हें भूखा न रहना पड़ेगा। बाड़ों में उन्होंने अपना खाद्य भण्डार रख छोड़ा था, और यह भण्डार ऐसा था जो अपने आप बड़ा होता रहता था और संख्या में भी बढ़ता जाता था।

शुरू-शुरू में लोग चौपायों को उनके माँस और खालों के लिए ही रखा करते थे। पशुपालन में जो भारी लाभ है, उसका उन्हें पता नहीं था। शिकारी इन खुरदार जानवरों को अपने शिकार की ही निगाह से देखते थे और अपने शिकार को मारने के वे आदी थे। उनके लिए यह समझना आसान नहीं था कि दूध देने वाले जानवर

गाय या भेड़ को ज़िन्दा पकड़ना उसे मारने से ज़्यादा फायदेमंद है।

दूध देने वाले जानवर को खाया एक ही बार जा सकता है, मगर उसका दूध बरसों पिया जा सकता है। दूध देने वाले जानवर को अगर वे मारें नहीं, तो अंततः एक ही जानवर से उन्हें ज़्यादा मॉस मिलेगा, क्योंकि वह हर साल बच्चा जनता है।

भेड़ के बारे में भी यही बात थी। मरी हुई भेड़ की खाल उतारना कोई मुश्किल न था। लेकिन एक खाल ज़्यादा काम की न थी। यह बात ज़्यादा फ़ायदे की थी कि खाल को भेड़ पर ही रहने दिया जाए और उसका ऊन काट लिया जाए, क्योंकि उस पर हर मुंडाई के बाद नया ऊन उग आता था। इस तरीक़े से उन्हें एक ही भेड़ से दस-दस लबादे तक मिल सकते थे।

जब आदमी ने भेड़ और घोड़े आदि को पालतू बना लिया, तो वह उन्हें अपनी मरज़ी के मुताबिक पालने-पोसने लगा। वह इस बात का ध्यान रखता कि उनका पेट भरता रहे और वे ठण्ड से बचे रहें। लेकिन बदले में गाय को पहले की अपेक्षा कहीं ज्यादा दूध देना पडता था, क्योंकि अब उसे केवल अपने बछडे को ही नहीं, बल्कि अपने मालिकों को भी दूध पिलाना पड़ता था। धीरे-धीरे घोड़े ने भारी बोझ ढोना सीख लिया। भेड़ के पास अब खुद अपने और अपने मालिकों के लिए काफ़ी ऊन था।

झुण्डों में सबसे ज्यादा दूध देने वाली गायों, सबसे मजबूत घोडों और सबसे लम्बे ऊनवाली भेड़ों को ही रहने दिया जाता था। इस तरह घरेलू पशुओं की नई नस्लें पैदा हुईं।

लोगों ने यह एकाएक ही शुरू नहीं कर दिया। शिकारी को पशुपालक बनने में कई सदियाँ लग गईं।

और अन्त में क्या हुआ?

लोगों ने एक अद्‌भुत भण्डारघर खोजा। अपने बचे हुए दानों को वे धरती में छिपा देते थे, और धरती उनके बोये हर दाने के बदले उन्हें ढेरों दाने लौटा देती थी।

वे अपने पकड़े सभी जानवरों को नहीं मार देते थे और जिन्हें वे ज़िन्दा रहने देते थे, वे बड़े होते थे और अपनी संख्या-वृद्धि करते थे।

आदमी ज़्यादा आजाद हो गया, वह अपने को प्रकृति पर कम आश्रित अनुभव करने लगा। पहले वह कभी नहीं जानता था कि वह किसी जानवर का पीछा करके उसे मार सकेगा या नहीं, उसे अपनी टोकरियाँ भरने लायक़ काफ़ी अनाज मिलेगा या नहीं। प्रकृति की रहस्यमय शक्तियाँ उसे उसका भोजन दे भी सकती थीं और नहीं भी। अब मनुष्य ने प्रकृति की सहायता करना सीख लिया था - उसने अपना अनाज पैदा करना और अपनी गायें-भेड़ें पालना-पोसना सीख लिया था। औरतों को अब जंगली धान्य, घासों की तलाश में नहीं जाना पड़ता था। शिकारियों को जंगल में जंगली जानवरों की तलाश



और उनका पीछा करने में अपने दिन बिताना नहीं पड़ते थे।

अब अनाज की बालियाँ घर के पास ही उगती थीं, और उनके निकट ही गायें और भेड़ें चरा करती थीं।

मनुष्य ने एक अद्भुत भण्डारघर पा लिया था। फिर भी, यही कहना ज़्यादा सही रहेगा कि यह उसे अचानक ही नहीं मिल गया था, वरन् उसने इसका अपने श्रम से निर्माण किया था।

उसे अपने खेतों और चरागाहों के लिए ज़मीन चाहिए थी। ज़मीन को जंगल से छीनना था, बुआई के पहले उसकी खुदाई करनी थी। यह कितना कठिन परिश्रम था!

मनुष्य प्रकृति से अपनी स्वतंत्रता और स्वाधीनता की तरफ़ ऐसे ही नहीं चला आया, उसे हज़ारों ही बाड़ों को लाँघकर अपना रास्ता निकालना पड़ा। उसकी नई उद्यमशीलता ने उसकी खुशियों और चिंताओं को बढ़ा दिया था। सूरज फ़सल को जला सकता था, वह चरागाहों की हरी घास को सुखा सकता था। अतिवर्षा से अनाज सड़ सकता था।



प्रागैतिहासिक शिकारी बाइसन या रीछ से अपने माँस का दान करने का अनुरोध करता था। प्रागैतिहासिक किसान धरती, आकाश, सूर्य और वर्षा से अच्छी फसल देने की प्रार्थना करता था।

लोगों ने नये देवी-देवताओं को जन्म दिया। ये देवता बहुत कुछ पुराने देवी-देवताओं जैसे ही थे। प्रथा के अनुसार वे अभी तक जानवरों के ही रूप में, या जानवरों के सिरवाले मनुष्यों के रूप में बनाए जाते थे। लेकिन इन पशुओं के नाम भी नए थे और काम भी।

एक का नाम आकाश था, दूसरे का सूर्य, तो तीसरे का पृथ्वी। उजाला और अंधेरा, वर्षा और सूखा पैदा करना इनका काम था। हमारे मनुष्य ने प्रौढ़ता की ओर कुछ और डग भरे थे, लेकिन वह अभी अपनी शक्ति को नहीं जानता था। उसे अभी तक यही विश्वास था कि उसका दैनिक भोजन उसके अपने श्रम का परिणाम नहीं है, बल्कि आकाश से प्रसाद के रूप में मिलता है।

**(अगले अंक में जारी)**

**'मनुष्य महाबली कैसे बना।' से साभार**

**प्रस्तुति : राजेश उत्साही**

---

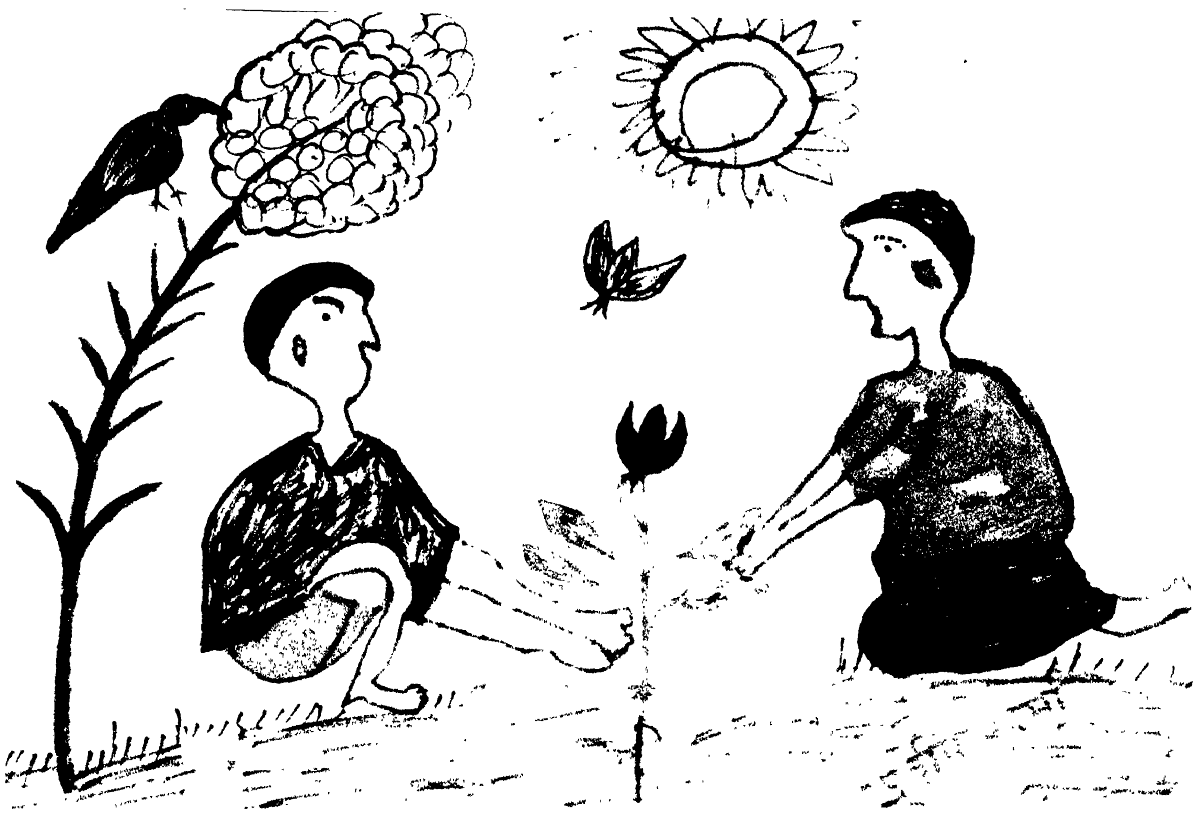
## *माथापच्ची : हल दिसम्बर, 94 अंक के*

1. बड़े भवन की पुताई में 7 दिन लगेंगे।
2. कम-से-कम 9 बार घन उछालना होगा।
3. तीनों खम्भे समान लम्बाई के हैं।
4. लम्बी भुजा का आखिरी गुटका बीच के गुटके के ऊपर रख दो। दोनों भुजाओं में 6-6 गुटके हो गए।
5. 1.8    2.झ    3.35  
   4.7    5.ब    6.15
6. पहली ढेरी में 22 तीलियाँ, दूसरी ढेरी में 14 तीलियाँ और तीसरी ढेरी में 12 तीलियाँ थीं।
7. $18 = (4+\frac{\sqrt{4}}{.4})^{\sqrt{4}}$

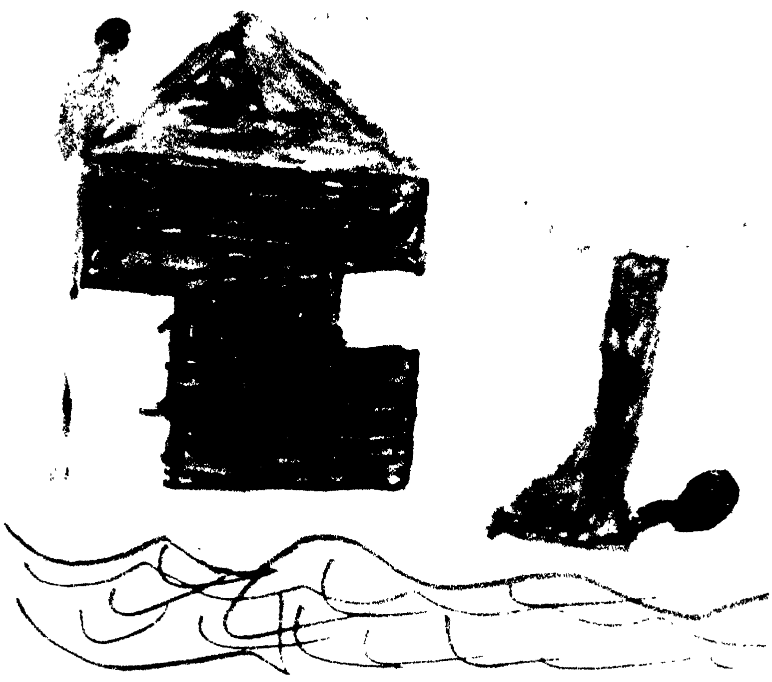
   $42 = 4\,(\frac{4}{.4}+\sqrt{4})$

   $50 = \frac{4}{.4} \times \frac{\sqrt{4}}{.4}$

   $68 = 4 + (4\times4)^{\sqrt{4}}$
8. इसका जवाब तुम खुद करके पता करो।



प्रदीप शर्मा, नेतनागर, रायगढ, म.प्र.



आदित्य तिवारी, तीसरी, धार, म.प्र.